वार्षिकी

(२०२१-२०२२)

ANNUAL REPORT

(2021- 2022)

सम्पादक

डॉ० अरुण कुमार झा

सचिव

दिल्ली-संस्कृत-अकादमी

(दिल्ली सरकार)

वार्षिकी

(वर्ष २०२१-२०२२)

सम्पादक

डॉ. अरुणकुमार झा

सचिव

सहायक सम्पादक

प्रद्युम्न चन्द्र

दिल्ली-संस्कृत-अकादमी

(राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार)

प्लाट सं.-५, झण्डेवालान, करोलबाग, नई दिल्ली-११०००५

website:- www.sanskritacademy.delhi.gov.in

E-mail:-delhisanskritacademy@gmail.com

प्रकाशक-

सचिव,

दिल्ली-संस्कृत-अकादमी

(राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार)

© दिल्ली-संस्कृत-अकादमी

प्राप्तिस्थान-

विक्रय-विभाग

दिल्ली संस्कृत अकादमी

(राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र, दिल्ली सरकार)

प्लाट सं0 5, झण्डेवालान, करोलबाग, नई दिल्ली-110005

दूरभाष : 011-23635592, 20920363

विषय सूची

क्र.सं.		पृष्ठ सं.
1.	संस्कृत भाषा का महत्त्व	1
2.	संस्कृतभाषा की उपादेयता	2
3.	दिल्ली संस्कृत अकादमी की सीपना	6
4.	दिल्ली संस्कृत अकादमी के उद्देश्य	7
5.	दिल्ली संस्कृत अकादमी के कार्यक्रम एवं गतिविधियाँ	8
6.	अकादमी द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की सूची एवं प्रेस विज्ञप्ति	19
7.	अकादमी प्रकाशनों का विवरण	36
8.	विक्रय हेतु उपलब्ध प्रकाशनों की सूची	44
9.	सी.ए. ऑडिट रिपोंट	

संस्कृत भाषा का महत्त्व

विश्व की अनेक प्राचीन सभ्यताएँ कालकवलित हो गयीं, किन्तु भारतीय संस्कृति आज भी विश्व के प्रांगण में अपना सम्मानपूर्ण तथा गौरवमय स्थान बनाए हुए है, इसका एक महत्त्वपूर्ण कारण यह है कि भारतीय संस्कृति के उद्‌भव एवं विकास को संस्कृत-भाषा का स्वर प्राप्त हुआ है। प्राचीन काल से ही विभिन्न संस्कृतियों, मान्यताओं, धार्मिक विश्वासों, बौद्धिक पूर्वाग्रहों की अभिव्यक्ति संस्कृत के माध्यम से हुई है। इसलिए बार-बार उद्‌घोष किया जाता रहा है-**'भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतं संस्कृतिस्तथा। ''** संस्कृत भाषा का साहित्यिक तथा प्राच्यविद्यापरक इतिहास मात्र एकवर्गीय चेतना की अभिव्यक्ति नहीं है, बल्कि इसमें मानव-सभ्यता के स्वस्थ मूल्यों की बहु-आयामी दिशाएँ मुखरित हुई हैं, जो भारत को 'जगद्‌गुरु' बनाने का गौरव प्रदान करती हैं। राष्ट्रीय एकता को एक सूत्र में पिरोने तथा भारत की सामाजिक संस्कृति को इन्द्रधनुषी रंग से अभिव्यक्ति प्रदान करने वाली एक दायित्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह संस्कृत-भाषा और उसका साहित्य प्राचीन काल से करता आया है। संस्कृत भारतवर्ष की राष्ट्रीय अखण्डता और 'अनेकता में एकता' का सन्देश सदियों से देती आयी है। कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक तथा गुजरात से लेकर नागालैण्ड तक भारत में तीन सौ से भी अधिक भाषाएँ या बोलियाँ बोली जाती हैं। संस्कृत इन सभी भाषाओं और बोलियों की माँ है और उन्हें एकता के सूत्र में बाँधती है। संस्कृत की राष्ट्रीय चेतना के परिणाम स्वरूप ही भारतवर्ष एक समृद्ध सांस्कृतिक राष्ट्र के रूप में अपना महत्त्वपूर्ण स्थान बना पाया है।

प्रत्येक सामुदायिक वर्ग और धार्मिक मतानुयायियों को राष्ट्रीय पटल पर आने की जब भी महत्त्वाकांक्षा हुई तो उन्हें संस्कृत के सहारे की आवश्यकता पड़ी। संस्कृत के पाश्चात्य विद्वान् 'मोनियर विलियम्स' की धारणा रही है कि **'यद्यपि भारतवर्ष में अनेक भाषाएं विद्यमान हैं, परन्तु भारतीयता के समर्थक सभी व्यक्तियों ने जाति, कुल मर्यादा तथा सम्प्रदाय से ऊपर उठकर सर्वसम्मति से संस्कृत और उनके साहित्य को महान आदर दिया। 'सर्वधर्म समभाव' एवं 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावधारा से इसने विश्वबन्धुत्व के कल्पवृक्ष को सींचा है। इसकी विभिन्न शाखाओं पर नाना संस्कृतियों के स्वर गुञ्जायमान हैं।'** संस्कृत मानव-सभ्यता के प्राचीनतम इतिहास से जुड़ी विश्व की

प्रथम भाषा है, जो प्राचीन होने के साथ-साथ आधुनिक भाषा के रूप में भी सर्वथा समर्थ है। चाहे विदेशी भाषाओं की बात हो या फिर आधुनिक भारतीय भाषाओं की, संस्कृत का सभी से घनिष्ठ सम्बन्ध देखा जा सकता है। भाषायी एकता की प्रेरणास्रोत होने के कारण संस्कृत को सभी भाषाओं की जननी कहा जाता है। संस्कृत की शुद्धता, पवित्रता, विलक्षणता और सार्वभौमिकता के कारण आचार्य दण्डी द्वारा इसे देववाणी के रूप में सम्मानित किया गया। उन्होंने काव्यादर्श में लिखा है **''संस्कृतं नाम दैवीवाक् अन्वाख्याता महर्षिभिः।''** वैदिक काल से संस्कृत भाषा भारतवर्ष की राष्ट्रीय भाषा होने के कारण 'भारत भारती' के रूप में व्यवहृत होती थी। वैदिक ऋषियों ने संस्कृत-भाषा के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ लोकभाषाओं के अभ्युदय की कामना भी की है। भारतवर्ष के संविधान में अपनाये गए **'सर्वभाषा उन्नति'** के सिद्धान्त का मूल स्वर ऋग्वेद में मिलता है- **''आ भारती भारतीभिः सजोषा'' (ऋग्वेद ७.२.८)**। वस्तुतः समस्त मानव-सभ्यता संस्कृत भाषा पर केन्द्रीभूत है, कहा भी गया है- **'संस्कृतिः संस्कृताश्रिता।'**

वर्तमान में संस्कृत भाषा की उपादेयता

संस्कृत भाषा ने देश की सभी विचार परंपराओं और सांस्कृतिक विरासतों का प्रतिनिधित्व किया है। चाहे वेदवादी रहे हों या वेदविरोधी, आस्तिक हों या नास्तिक, जैन हों या बौद्ध, शैव हों या वैष्णव, अध्यात्मवादी हों या लोकायत्तिक, मुस्लिम हों या यूरोपियन सभी ने संस्कृत-साहित्य के महासमुद्र में अपनी वाग्धारा अर्थ का अर्घ्य समर्पित किया है तथा ऐतिहासिक साक्ष्य के रूप में यह गवाही भी दी है कि संस्कृत ने राष्ट्रीय स्तर पर पारस्परिक भ्रातृत्व संवाद के लिये मार्ग प्रशस्त किया है तथा सम्प्रदायवाद एवं प्रान्तवाद से ऊपर उठकर राष्ट्रीय प्रज्ञा के संग्रहण और संवर्धन के स्वर्णिम अवसर जुटाए हैं। ये ही कारण हैं कि धर्मवादी और अर्थवादी, जड़वादी तथा चेतनावादी सभी विचार-परम्पराओं के ऐतिहासिक तट संस्कृत-साहित्य में निर्मित हुए हैं। किन्तु आज हम किन्हीं राजनीतिक और आर्थिक संकीर्णताओं से अभिशप्त होकर पश्चिमी ज्ञान-विज्ञान की ओर लालायित हैं तथा संस्कृत-साहित्य के अध्ययन की ओर हमने उपेक्षा की दृष्टि अपना ली है।

ज्ञान-विज्ञान के सवंर्धन का चाहे राष्ट्रीय सन्दर्भ हो या फिर अन्तर्राष्ट्रीय, संस्कृत विद्या के अक्षर भण्डार का अपलाप नहीं किया जा सकता है। भारतीय तत्त्व-चिन्तकों ने ही सर्वप्रथम सत्यानुसन्धान की वैज्ञानिक प्रक्रिया का आविष्कार करते हुए यह उद्घाटित किया है कि **''हिरण्मयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम्''** (ईशोपनिषद् 18) अर्थात् भौतिकवादी चमक-दमक से सत्य को ढाँप दिया जाता है। इसलिए सत्यानुसन्धान के शोधार्थी के लिए यह आवश्यक है कि वह **'वादे वादे जायते तत्त्वबोधः'** की मार्ग-सरणी का पथिक बनकर आधुनिक मानव के लिए तुलनात्मक ज्ञान-विज्ञान का द्वार

खोले, परन्तु इस मार्ग में उसे सर्वप्रथम प्राचीन भारतीय वाङ्मय के रम्य तपोवनों से गुजरना होगा और उसके बाद ही वह आधुनिक विश्वविद्यालयीय ज्ञान-विज्ञान का वास्तविक मूल्यांकन कर सकता है। आधुनिक मानव के लिए संस्कृत विद्या की अनिवार्यता इसलिए भी रेखांकित हो जाती है, ताकि वह आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के मूल स्रोतों को पकड़ सके और यह जान सके कि आधुनिक ज्ञान-विज्ञान कितना प्रगतिशील है। विदेशों में इस अमूल्य ज्ञान-सम्पदा का व्यापक स्तर पर दोहन-कार्य पिछली तीन सदियों में निरन्तर प्रगति पर है, किन्तु भारतवर्ष में इस दिशा में गम्भीरता से सोचना प्रारम्भ नहीं हुआ। जिसके फलस्वरूप सम्बन्धित विचारकों द्वारा भारतीय विद्या और उसके प्राचीन ज्ञान-विज्ञान को या तो साम्प्रदायिकता का नाम देकर हतोत्साहित कर दिया जाता है या फिर उसे एक निम्नस्तरीय ज्ञान-विज्ञान मानकर अवमानित किया जाता है इस मानसिकता का एक मुख्य कारण है राष्ट्रीय अस्मिता के प्रति उदासीनता तथा पाश्चात्य ज्ञान-विज्ञान को उत्कृष्ट मानने का पूर्वाग्रह। ब्रिटेन, रूस, अमेरिका, फ्रांस, जर्मनी आदि देशों में संस्कृत-विद्या के अध्ययन को जो प्रोत्साहन दिया जा रहा है उसका मुख्य कारण यह है कि वहाँ के बुद्धिजीवियों ने संस्कृत की प्रासंगिकता को आधुनिक सन्दर्भ में भी चरितार्थ किया है। उदाहरण के लिए अमेरिका के वैज्ञानिकों ने **ब्लूमफील्ड** की इस मान्यता को सत्य सिद्ध किया है कि **'पाणिनि की अष्टाध्यायी की सहायता से अमेरिकन वैज्ञानिक कम्प्यूटर प्रणाली का आविष्कार करने में सफल हुए हैं।'** सोवियत विद्वान् **गोरबोवस्की** महाभारत में ब्रह्मास्त्र-प्रयोग के अवतरणों से प्राचीन भारत में 'एटमबम' के अस्तित्व होने की सम्भावनाओं का पता लगा रहे हैं। संस्कृत-विद्याओं के वैज्ञानिक महत्त्व के कारण इंग्लैण्ड, अमेरिका आदि में वैदिक गणित को शिक्षा के पाठ्यक्रम का अंग ही बना दिया गया है। लन्दन में 10+2 प्रणाली के अन्तर्गत गणित के आधुनिक फार्मूलों को समझने के लिए प्राचीन भारतीय गणित शास्त्र को एक उपयोगी प्रणाली के रूप में मान्यता मिल चुकी है। संस्कृत अध्ययन से जुड़ी इन अन्तर्राष्ट्रीय उपलब्धियों से यह भली-भाँति सिद्ध हो जाता है कि आज भारत में संस्कृत को महत्त्व देना कितना आवश्यक है।

18वीं शताब्दी आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के ध्रुवीकरण की एक महत्त्वपूर्ण शताब्दी रही है इसी शताब्दी में 'सर विलियम जोन्स- V' ने 'संस्कृत की खोज' (डिस्कवरी ऑफ संस्कृत) के साथ प्राच्य विद्या अनुसंधान की आधारशिला रखी। 'संस्कृत की खोज' से पाश्चात्य विद्वान् एक 'भारोपीय भाषा परिवार' की नवीन अवधारणा का भी आविष्कार करने में सफल हुए, जिसका अर्थ है विश्व की सभी भाषाओं में संस्कृत-भाषा का अवेस्ता, ग्रीक, लैटिन आदि भाषाओं के साथ तुलनात्मक अध्ययन। भाषा

साथ तुलनात्मक अध्ययन। भाषा वैज्ञानिक-विषय प्रकाश में आए तो दूसरी ओर तुलनात्मक धर्म विज्ञान के माध्यम से 'विश्व संस्कृति' के इतिहास को जानने के लिए संस्कृत-भाषा की महत्ता उभर कर आयी। यूरोपीय सभ्यताएँ वैदिक आर्यों के साथ अपने सांस्कृतिक सम्बन्धों को जोड़ने की होड़ में लग गयीं। निःसन्देह संस्कृत के कारण **'वसुधैव कुटुम्बकम्'** की आधुनिक व्याख्या सम्भव है तथा भारत को अन्तर्राष्ट्रीय सम्मान भी प्राप्त होता है।

सत्य तो यह है कि वैदिक काल से संस्कृत भाषा भारतवर्ष की राष्ट्रीय भाषा होने के कारण 'भारत भारती' के रूप में व्यवहृत होती थी। वैदिक ऋषियों ने संस्कृत-भाषा के प्रचार-प्रसार के साथ-साथ लोक-भाषाओं के अभ्युदय की कामना भी की है और भारतवर्ष के संविधान में अपनाये गये **'सर्वभाषा उन्नति'** के सिद्धान्त को स्वर प्रदान करते हुए कहा- **'आ भारती भारतीभिः सजोषा'** (ऋग्वेद 7.2.8)।

पिछली अनेक अन्धकार युगीन शताब्दियों में जब भारत अपनी राजनीति कमजोरियों के कारण राज्यों में विभक्त हो गया था, उस समय भी संस्कृत को 'कार्य-व्यवहार' और 'राजभाषा' का दर्जा प्राप्त था। वास्तविकता तो यही है कि भले ही हम अपने क्षुद्र राजनीतिक स्वार्थों के कारण 'प्रान्तवाद' और 'क्षेत्रीयवाद' के गणित को अपनाते आए हैं, परन्तु जब भी जन-जीवन के 'राष्ट्रीय-चेतना' और 'अखण्ड भारत' की भावना आई है, उसका उदाहरण संस्कृत-भाषा और संस्कृत-साहित्य ही रहा है।

सामान्यतया यह भ्रान्त धारणा प्रचलित है कि मुस्लमान शासकों के राज्यकाल में संस्कृत भाषा और साहित्य हतोत्साहित हुआ। प्रसिद्ध इतिहासकार श्री रमेशचन्द्र मजूमदार ने इस मिथ्या धारणा का खण्डन करते हुए कहा कि 'मुसलमान शासक संस्कृत-प्रेमी थे और उनके शासन काल में संस्कृत को प्रश्रय तथा प्रोत्साहन मिला।' क्षेमेन्द्रकृत 'लोकप्रकाश' नामक ग्रन्थ में वर्णित है कि मुस्लिम शासन के प्रारम्भ होने के बाद भी दीर्घकाल तक कश्मीर में संस्कृत राजकीय व्यवहार, न्यायालयों और शासकीय आदेशों की भाषा रही थी। इस ग्रन्थ में दैनिक शासन की लिखा-पढ़ी, प्रतिवेदन, प्रलेख आदि के जो नमूने दिये गए हैं, वे संस्कृतनिष्ठ ही हैं। **'लेखपद्धति'** नामक ग्रन्थ से यह भी ज्ञात होता है कि गुजरात के सुल्तान बहुत समय तक राजभाषा के रूप में संस्कृत का ही व्यवहार करते आये थे। कश्मीर के इतिहास में जैनुल आबदीन (1420-70 ई.) संस्कृत-साहित्य और भारतीय विद्याओं का अनन्य प्रेमी था। भारतवर्ष में अनेक ऐसी मुस्लिम कब्रें भी मिली हैं जिन पर शिलालेख संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण हुए हैं। अब्दुल रहमान नामक प्रसिद्ध साहित्यकार संस्कृत, प्राकृत तथा अपभ्रंश का मर्मज्ञ विद्वान था। अकबर के राज्यकाल में संस्कृत भाषा और उसके विद्वानों को विशेष समादर मिला था। अबुल फज़ल के भाई फौजी संस्कृत के बहुत अच्छे

विद्वान् थे। उन्होंने हिन्दी तथा संस्कृत की सम्मिश्रित भाषा में रहीम काव्य की रचना की तथा **'खेट कौतुकम्'** नामक एक ज्योतिष ग्रन्थ का भी निर्माण किया। शाहजहाँ के समय में भी संस्कृत को राजकीय सम्मान प्राप्त था, राजकुमार दाराशिकोह संस्कृत का पारंगत विद्वान् था, जिसकी प्रेरणा से उपनिषदों, भवगद्गीता, योगा-वाशिष्ठ आदि का फारसी में अनुवाद भी करवाया गया। मुस्लिम राजपरिवार की महिलाएँ भी संस्कृत-काव्य के प्रति मुग्ध थीं। शाहजहाँ की बेगम रूपराशि बंशीधर मिश्र की संस्कृत-रचनाओं से अत्यन्त प्रभावित थी। इन सभी तथ्यों से स्पष्ट है कि संस्कृत-भाषा की माधुरी और उसके तत्त्वावगाहन की प्रवृत्ति ने मुस्लिम शासन को भी मन्त्र-मुग्ध कर लिया था तथा मुस्लिम शासकों, साहित्यकारों तथा बुद्धिजीवियों ने इसके संवर्धन और विकास के लिए अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

इस प्रकार संस्कृत, भूत, भविष्य और वर्तमान भारत के लोकमानस की भव्य अभिव्यक्ति उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम का अखण्ड भारत प्रतिबिम्बित है; विभिन्न धार्मिक और वैचारिक के स्वर गुंजायमान हैं; राष्ट्रीय अस्मिता का प्रतीक संस्कृत भाषा के साहित्यिक कलेवर में मानवी के उत्कृष्ट ज्ञान-विज्ञान की लहरें हिलोरे मार रही हैं।

आज भारतवर्ष में जो पाश्चात्य सभ्यता और विचारों का पोषण एवं पल्लवन किया है, उसका मूल भारतवर्ष के प्राचीन ऋषियों और तत्त्वचिन्तकों के ज्ञान-विज्ञान में निहित चाहे लोकतन्त्र की हो या धर्मनिरपेक्षता की, स्वतंत्रता के अर्थ को समझना हो या फिर शान्ति विश्व-बधुत्व के अभिप्राय को, संस्कृत-साहित्य के निर्मल कलेवर में इसका वास्तविक अर्थ दिया गया है। गणित शास्त्र, राजनीति शास्त्र, अर्थशास्त्र, भूगोल, ज्योतिषशास्त्र, दर्शनशास्त्र, साहित्य, संगीत आदि ज्ञान की महनीय परम्पराएं भारतवर्ष की अमूल्य निधियाँ हैं और ये सभी निधियाँ संस्कृत के पिटारे में हैं। आज अंग्रेजी शिक्षा-व्यवस्था के परिणाम स्वरूप हम भारतीय विज्ञान से प्रतिदिन जो विमुख जा रहे हैं, उसके प्रचार-प्रसार की ओर हम फिर से लौटें। हमें नालन्दा और तक्षशिला जैसे विश्वविद्यालयों की भाँति विश्वस्तर पर शिक्षा-जगत् को ऊँचा उठाना है। मानव की मौलिक समस्या के विषय में भारतीय तत्त्वज्ञानियों ने जो अपने अनुभवपरक वैज्ञानिक सत्यों का रहस्योद्घाटन किया है, विश्व के बुद्धिजीवियों तक उन्हें पहुँचाना है। यह तभी सम्भव हो सकता है, जब राष्ट्रीय स्तर पर संस्कृत को प्रोत्साहन दिया जाए। राष्ट्रीय उन्नति के लिए सांस्कृतिक उन्नति आवश्यक है और संस्कृति का प्रसार संस्कृत से ही सम्भव है।

यथैव चन्द्रिका चन्द्रे राजते नित्यसङ्गता।
संसिक्ता संस्कृते तद्वद् भारतस्यास्ति संस्कृतिः॥

दिल्ली संस्कृत अकादमी की स्थापना

संस्कृत भाषा के महत्त्व को दृष्टि में रखते हुए तथा राष्ट्र की संस्कृति, सभ्यता, भाषा एवं साहित्य के संरक्षण और विकास के प्रति अपने दायित्व को समझते हुए देश व राज्य की सरकारें राष्ट्रीय अखण्डता व भाषायी एकता की प्रतीक संस्कृत भाषा के संरक्षण एवं प्रचार-प्रसार के लिए अधिकाधिक प्रयत्नशील हैं।

इसी उद्देश्य से उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान व अन्य राज्यों में संस्कृत अकादमियाँ कार्य कर रहीं हैं। संघ राज्य दिल्ली में भी हिन्दी, उर्दू तथा पंजाबी अकादमियों की तरह वर्ष 1987 में दिल्ली संस्कृत अकादमी की स्थापना की गई थी। इस सम्बन्ध में दिल्ली के महामहिम उपराज्यपाल महोदय द्वारा दिनांक 30.3.1987 को अधिसूचना जारी की गई और इस अकादमी को सोसायटी पंजीकरण एक्ट 1860 के अन्तर्गत पंजीकरण संख्या एस-17783, दिनांक 17.5.1987 से पंजीकृत कराया गया।

अकादमी के लिए सहायता पद्धति भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के पत्र संख्या एफ. 5(17)88 यू.टी.आई. दिनांक 30.3.88 एवं 5.9.88 से अनुमोदित हुई।

स्थापना के अनन्तर 'दिल्ली संस्कृत अकादमी' संस्कृत के प्रचार-प्रसार के लिए निरन्तर गतिशील है।

दिल्ली संस्कृत अकादमी के उद्देश्य

1. संस्कृत भाषा एवं उसके साहित्य के उत्थान, प्रचार-प्रसार हेतु वर्तमान एवं भविष्य के लिए अकादमी अनुदान प्राप्त करेगी। संस्कृत-पुस्तकों का प्रकाशन तथा ऐसी मूल कृतियों का प्रकाशन, जो अब तक प्रकाशित न हुए हों, सांस्कृतिक एवं साहित्यिक संदर्भ-कोष, ज्ञान-कोष आदि कोष-ग्रन्थों की प्रारम्भिक शब्दावली, संस्कृत से सम्बन्धित विभिन्न प्रकार के ग्रन्थों का विभिन्न भाषाओं में अनुवाद करने के लिए प्रोत्साहन देने हेतु अकादमी अपने स्तर पर उक्त कार्यक्रमों की व्यवस्था करेगी।

2. अकादमी राष्ट्रीय और क्षेत्रीय स्तर पर संस्कृत-सम्मेलन, संगोष्ठी, परिसंवाद, नृत्य, नाटक, काव्य-गोष्ठी, संस्कृत से सम्बन्धित प्रदर्शनी, प्रतियोगिताएँ, संस्कृत से सम्बन्धित समस्याओं के सम्बन्ध में वाद-विवाद, गोष्ठी, विभिन्न भाषाओं के तुलनात्मक अध्ययन एवं संस्कृत से सम्बन्धित ऐतिहासिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक यात्राओं आदि विभिन्न प्रकार से संस्कृत सम्बन्धी कार्यक्रमों की व्यवस्था करेगी। इस सम्बन्ध में भारत सरकार के द्वारा समय-समय पर संस्कृत भाषा के प्रचार-प्रसार हेतु जारी किये गये आदेशों के कार्यान्वयन की व्यवस्था करेगी।

3. साहित्यकारों को उनकी अद्भुत साहित्यिक रचनाओं तथा संस्कृत के क्षेत्र में प्रशंसनीय कार्यों के लिए मान्यता प्रदान करना एवं पुरस्कृत करना आदि अन्य आर्थिक सहयोग प्रदान करने की व्यवस्था करेगी। संस्कृत के कवियों, लेखकों की अप्रकाशित उपयोगी कृतियों की प्रकाशन-व्यवस्था करेगी।

4. संस्कृत के विद्वानों को उच्च शिक्षा एवं शोध के लिए प्रोत्साहन देगी।

5. दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों में संस्कृत-केन्द्रों की स्थापना करेगी तथा उन केन्द्रों के लिए पाठ्य-पुस्तकों को तैयार करेगी तथा केन्द्रों में अध्ययनरत छात्रों को प्रोत्साहन देगी।

6. संस्कृत-पाठशालाओं के उत्थान के लिए प्रोत्साहन देगी तथा आवश्यकता पड़ने पर उनके लिए पाठ्यक्रम, पाठ्यपुस्तकों, परीक्षाओं इत्यादि की व्यवस्था के लिए प्रोत्साहन देगी।

कार्यक्रम / गतिविधियाँ

दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार की एक स्वायत्तशासी संस्था है। अकादमी द्वारा संस्कृत के प्रचार–प्रसार हेतु प्रतिवर्ष निम्नलिखित कार्य किए जाते हैं, जो अकादमी की कार्य–समिति द्वारा समय–समय पर निर्धारित नीति के अनुसार सम्पन्न कराए जाते हैं, तथा अनुदान राशि की उपलब्धता पर निर्भर करते हैं।

सम्मान

क्र.सं.	सम्मानों के नाम	पुरस्कार राशि
1.	संस्कृत साहित्य एवं संस्कृत साहित्य–सृजन के क्षेत्र में जीवनकाल में समग्र और अप्रतिम साहित्यिक योगदान के निमित्त **महर्षिवेदव्यास–सम्मानः**	1,50,000 /–
2.	संस्कृति के क्षेत्र में (संस्कृत शिक्षा, संस्कृत पत्रकारिता, भाषा, आलोचना आदि में) जीवनकाल में सम्पूर्ण सांस्कृतिक अवदान के निमित्त सम्मान **महर्षिवाल्मीकि–सम्मानः**	1,50,000 /–
3.	कथा साहित्य / व्याकरण / दर्शन के क्षेत्र में अवदान के निमित्त सम्मान– **बाणभट्ट सम्मानः / पाणिनि सम्मानः / शंकरसम्मानः**	50,000 /–
4.	काव्य रचना / वेद / ज्योतिष / आयुर्वेद के क्षेत्र में विशिष्ट अवदान के निमित्त सम्मान **पण्डितराजजगन्नाथसम्मानः / सायणसम्मानः / भास्कराचार्यसम्मानः / धन्वन्तरिसम्मानः**	50,000 /–
5.	बाल साहित्य (संस्कृत–अध्यापन आदि) के क्षेत्र में विशिष्ट अवदान के निमित्त सम्मान **पं॰ विष्णुशर्मा–सम्मानः**	50,000 /–

वर्ष 2009–2010 से प्रारम्भ किए गये ये सम्मान प्रविष्टियाँ आमन्त्रित करने के पश्चात् अकादमी की समिति के द्वारा प्रविष्टियों के मूल्यांकन के पश्चात् चयनित विद्वानों को दिये जाते हैं, जिसमें उपर्युक्त राशि के अतिरिक्त मंगल कलश, शाल, अंगवस्त्र, प्रशस्ति–पत्र एवं प्रतीक चिह्न आदि द्वारा एक भव्य समारोह का आयोजन कर विद्वानों को सम्मानित किया जाता है।

विद्यालीय/महाविद्यालीय–संस्कृत–सेवा सम्मान

इस योजना के अन्तर्गत दिल्ली स्थित विद्यालयों, महाविद्यालयों, संस्कृत–महाविद्यालयों/विद्यालयों के संस्कृत शिक्षकों एवं शिक्षिकाओं को अकादमी द्वारा निर्धारित नीति के अनुसार केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा परिषद् की परीक्षाओं संस्कृत विषय में कक्षा 10वीं एवं 12वीं अथवा 10वीं एवं 12वीं में सभी पढ़ाये गये छात्र/छात्राओं का 100 प्रतिशत परीक्षा परिणाम होने पर प्रति वर्ष सम्मानित किया जाता है। इसके अतिरिक्त उत्कृष्ट परीक्षा परिणाम तथा छात्र–संख्या के आधार पर विद्यालयों/महाविद्यालयों एवं संस्कृत–विद्यालयों/महाविद्यालयों को भी सम्मानित किया जाता है। पुरस्कार स्वरूप प्रशस्तिपत्र, संस्कृत–साहित्य, अंग–वस्त्र, तथा शाल आदि देकर एक भव्य समारोह में सम्मानित किया जाता है। इसके लिए अकादमी द्वारा प्रत्येक विद्यालय/महाविद्यालय/संस्कृत–विद्यालय/संस्कृत–महाविद्यालयों को पत्र एवं प्रपत्र भेजे जाते हैं तथा विभिन्न समाचार पत्रों में विज्ञापन प्रकाशित कर सूचित किया जाता है।

संस्कृत समाराधक सम्मान

इस योजना के अन्तर्गत दिल्ली स्थित विद्यालयों के संस्कृत एवं संगीत शिक्षक/शिक्षिकाओं को शिक्षा निदेशालय के 13 मण्डलों में आयोजित प्रतियोगिताओं में छात्र/छात्राओं को तैयार करने हेतु सम्मानित किया जाता है तथा इसके लिए अकादमी द्वारा प्रत्येक विद्यालय को पत्र द्वारा सूचित किया जाता है तथा विभिन्न समाचार पत्रों में भी विज्ञापन देकर सूचित किया जाता है। जिन विद्यालयों ने मण्डलीय स्तर पर आयोजित प्रतियोगिताओं में भाग लेकर प्रथम से प्रोत्साहन तक स्थान प्राप्त किया है, उन विद्यालयों के जिन शिक्षकों ने प्रतियोगिताओं के लिए छात्र/छात्राओं को तैयार किया हो उन्हें पुरस्कार स्वरूप प्रशस्ति पत्र, अंग–वस्त्र एवं संस्कृत–साहित्य आदि देकर एक भव्य समारोह में सम्मानित किया जाता है।

सम्मेलन

- अखिल भारतीय/अन्ताराष्ट्रिय संस्कृत सम्मेलन — **एक**
- अखिल भारतीय संस्कृत कवि सम्मेलन — **दो**

- अखिल भारतीय ज्योतिष सम्मेलन — एक
- अखिल भारतीय आयुर्वेद सम्मेलन — एक
- अखिल भारतीय संस्कृत पत्रकार सम्मेलन — एक
- अखिल भारतीय संस्कृत छात्र सम्मेलन — एक
- अखिल भारतीय संस्कृत विदुषी सम्मेलन — एक

ये सम्मेलन समाचार पत्रों में विज्ञापन देकर अथवा विद्वानों से पत्राचार करके उपयुक्त एवं प्रतिष्ठित विद्वानों को आमन्त्रित करके आयोजित किए जाते हैं।

संस्कृत–परिचर्चा–संगोष्ठी

संस्कृत के प्रचार–प्रसार हेतु विद्वानों के विचार जानने के लिए संस्कृत साहित्य पर आधारित अनेक विषयों पर जैसे प्राचीन काल में युद्ध–विद्या, संस्कृत–वाङ्मय को मुस्लिम विद्वानों का योगदान, पंजाबी भाषा पर संस्कृत का प्रभाव, प्राचीन भारत के अन्ताराष्ट्रिय सम्बन्ध इत्यादि पर संगोष्ठी और परिचर्चा आयोजित की जाती हैं।

संस्कृत–कवियों, लेखकों से साक्षात्कार

संस्कृत भाषा के कवियों/लेखकों के साक्षात्कार आयोजित करके उन्हीं के मुख से काव्यरचना इत्यादि के लिए मिली प्रेरणा तथा उनके जीवन के अनुभवों से जन–सामान्य को परिचित कराया जाता है।

दिल्ली के संस्कृत–विद्वानों की समाराधना

यह कार्यक्रम दिल्ली के प्रतिष्ठित संस्कृत–विद्वानों की साहित्यिक कृतियों और संस्कृत के प्रचार–प्रसार के लिए उनके योगदान पर आधारित होता है, जिसमें सम्बन्धित विद्वान्/विदुषी की समस्त कृतियों पर परिचर्चा आयोजित की जाती है।

संस्कृत प्रतिभा पुरस्कार (छात्रों के लिए)

इस योजना के अन्तर्गत सभी विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं संस्कृत विद्यालयों को पत्र द्वारा तथा समाचार पत्रों में विज्ञापन प्रकाशित कर 10वीं, 12वीं, बी० ए०, एम० ए०, प्रथमा, पूर्व मध्यमा, उत्तर मध्यमा, शास्त्री तथा आचार्य में उत्कृष्ट परिणाम वाले संस्कृत–छात्रों के नाम मंगाये जाते हैं। उनको प्रशस्ति पत्र, अकादमी द्वारा प्रकाशित साहित्य तथा रु० 500 से रु० 1500 तक की राशि देकर पुरस्कृत किया जाता है।

छात्रवृत्ति

दिल्ली के सभी विद्यालयों/महाविद्यालयों/संस्कृत–महाविद्यालयों को पत्र भेज कर तथा समाचार पत्रों में विज्ञापन दे कर संस्कृत विषय में उत्कृष्ट अंक प्राप्त कर अगली कक्षा में पुनः संस्कृत विषय लेकर पढ़ने वाले छात्र/छात्राओं को कक्षा 9 से एम० ए० तक तथा संस्कृत विद्यालयों में पूर्व मध्यमा प्रथम वर्ष से आचार्य तक के सभी छात्रों को अकादमी समिति के द्वारा निर्धारित नीति के अनुसार निर्धारित पुरस्कार राशि छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है।

मण्डलीय संस्कृत प्रतियोगिताएँ एवं पुरस्कार

ये प्रतियोगितायें शिक्षा निदेशालय के सभी 13 मण्डलों में 6 दिनों तक संस्कृत छात्र/छात्राओं के बीच संस्कृत भाषण, एकल तथा सामूहिक श्लोक संगीत, संस्कृत–वाद–विवाद, संस्कृत में कव्वाली एवं संस्कृत श्लोकोच्चारण पर आधारित होती हैं। प्रत्येक मण्डल के प्रथम एवं द्वितीय स्थान पाने वाले दलों के बीच एक केन्द्रीय प्रतियोगिता का आयोजन किया जाता है। जिसके आधार पर पुरस्कार तथा प्रमाण पत्र दिए जाते हैं। इससे बच्चों में नेतृत्व, मंच पर संस्कृत में अपनी भावना व्यक्त करने जैसे संस्कारों का समावेश होता है। इसी प्रकार विश्वविद्यालय स्तर पर भी संस्कृत–नाट्य, भाषण, वाद–विवाद, श्लोकसंगीत तथा काव्यालि–प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है तथा पुरस्कार वितरित किये जाते हैं।

संस्कृत प्रश्न–मंच प्रतियोगिता

यह प्रतियोगिता सामान्य महाविद्यालयों एवं परम्परागत संस्कृत–विद्यालयों के छात्र–छात्राओं के लिए आयोजित की जाती है, जिसमें छात्र/छात्राओं से वेद एवं उपनिषद्, दर्शनशास्त्र, व्याकरण, धर्मशास्त्र, ज्योतिष, वैदिक गणित, आयुर्वेद आदि विषयों पर प्रश्न पूछे जाते हैं तथा उत्कृष्ट परिणाम वाले छात्रों को अकादमी द्वारा पुरस्कृत किया जाता है।

व्याकरणसूत्र–अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता

इस प्रतियोगिता का आयोजन परम्परागत संस्कृत विद्यालयों/महाविद्यालयों के छात्र/छात्राओं के लिए होता है। उत्कृष्ट परिणाम वाले छात्र/छात्राओं को अकादमी समिति द्वारा निर्धारित नीति के अनुसार पुरस्कृत किया जाता है।

संस्कृत–भाषण प्रतियोगिता

इस प्रतियोगिता का आयोजन सामान्य महाविद्यालय एवं परम्परागत संस्कृत–विद्यालयों के छात्र/छात्राओं के लिए करवाया जाता है। उत्कृष्ट परिणाम वाले छात्र/छात्राओं को अकादमी समिति द्वारा निर्धारित नीति के अनुसार पुरस्कृत किया जाता है।

संस्कृत–नाट्य–एवं एकांकी नाटक प्रतियोगिता

इस प्रतियोगिता के अन्तर्गत सामान्य महाविद्यालयों, परम्परागत संस्कृत–विद्यालयों /महाविद्यालयों एवं शिक्षा निदेशालय के विद्यालयों के छात्र/छात्राओं द्वारा अलग–अलग नाट्य–मंचन दिल्ली के सभागारों में किये जाते हैं। भाग लेने वाले छात्र/छात्राओं को अकादमी समिति द्वारा निर्धारित नीति के अनुसार पुरस्कृत किया जाता है।

श्लोक–अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता

इस प्रतियोगिता के अन्तर्गत परम्परागत संस्कृत विद्यालयों के छात्र/छात्राएँ भाग लेते हैं। उत्कृष्ट परिणाम वाले छात्र/छात्राओं को अकादमी समिति द्वारा निर्धारित नीति के अनुसार पुरस्कृत किया जाता है।

सद्यः निबन्ध लेखन प्रतियोगिता

इस प्रतियोगता का आयोजन सामान्य महाविद्यालयों एवं परम्परागत संस्कृत विद्यालयों के छात्र/छात्राओं के लिए किया जाता है जिसमें निबन्ध लिखने का विषय प्रतियोगिता स्थल पर ही प्रदान किये जाते हैं। जिन पर प्रतिभागियों को निबन्ध लिखना होता है।

संस्कृत लघु–चलचित्र–निर्माण प्रतियोगिता

इस प्रतियोगता का आयोजन दिल्ली स्थित संस्कृत/सामान्य महाविद्यालय में किया जाता है। जिसमें शास्त्री/आचार्य/स्नातक/स्नातकोत्तर स्तर के छात्र/छात्राएं भाग लेते हैं। इस प्रतियोगिता में प्रतिभागी चलचित्रों के विषय चयन के लिए स्वतन्त्र होते हैं, परन्तु चलचित्र अमर्यादित अश्लील एवं राष्ट्रविरोधी नहीं होने चाहिए तथा चलचित्रों को मोबाइल या अन्य रिकार्डिंग यन्त्रों के माध्यम से बनाया जाता है तथा प्रतियोगिता स्थल पर इनको प्रोजेक्टर के माध्यम से दिखाया जाता है।

चित्राधारित श्लोक–रचना प्रतियोगिता

इस प्रतियोगता में प्रतिभागियों को प्रतियोगिता स्थल पर ही चित्र आवंटित किये जाते हैं, जिनको देखकर श्लोकों की रचना करनी होती है, श्लोकों की संख्या कम से कम 6 होनी आवश्यक होती है, श्लोक रचना के लिए छन्द चयन हेतु प्रतिभागी स्वतन्त्र होता है।

प्राचीनकाव्यों पर आधारित प्रतियोगिता

यह प्रतियोगिता स्नातक / स्नात्ताकोत्तर / शास्त्री / आचार्य स्तर के छात्र / छात्राओं के लिए की जाती है। इस प्रतियोगिता में महाकवि कलिदास, पण्डितराज जगन्नाथ, भतृहरि, भवभूति, भारवि, भास, श्रीहर्ष, वाल्मीकि और जयदेव आदि की रचनाओं पर आधारित–काव्यों का काव्यपाठ किया जाता है, जिसमें अनुष्टुप छन्द के सात श्लोक और अन्य छन्दों के पांच श्लोक छात्र / छात्रा को प्रस्तुत करने होते हैं।

संस्कृत वार्ता–अनुवाद प्रतियोगिता

संस्कृत वार्ता प्रतियोगिता का आयोजन दिल्ली स्थित सामान्य महाविद्यालय / संस्कृत महाविद्यालय के छात्र–छात्राओं के लिए किया जाता है। जिसमें प्रतिभागी को प्रतियोगिता स्थल पर निर्धारित विषय पर संस्कृत में तीन मिनट की वार्ता प्रस्तुत करनी होती है, जिसके लिए 30 मिनट पूर्व वार्ता की विषयवस्तु हिन्दी भाषा में प्रदान की जाती है जिसको प्रतिभागी द्वारा प्रतियोगिता स्थल पर संस्कृत में अनुवाद करके वार्ता प्रस्तुत करनी होती है।

संस्कृत–वाद–विवाद प्रतियोगिता

इस प्रतियोगिता का आयोजन सामान्य महाविद्यालयों परम्परागत एवं संस्कृत विद्यालयों के छात्र / छात्राओं के लिए करवाया जाता है। उत्कृष्ट परिणाम वाले छात्र / छात्राओं को अकादमी समिति द्वारा निर्धारित नीति के अनुसार पुरस्कृत किया जाता है।

वेद–मंत्र–अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता

इस प्रतियोगिता का आयोजन सामान्य महाविद्यालयों एवं परम्परागत संस्कृत विद्यालयों के छात्र / छात्राओं के लिए करवाया जाता है। उत्कृष्ट परिणाम वाले छात्र / छात्राओं को अकादमी समिति द्वारा निर्धारित नीति के अनुसार पुरस्कृत किया जाता है।

एकल श्लोक–संगीत–प्रतियोगिता

इस प्रतियोगिता का आयोजन सामान्य महाविद्यालय एवं परम्परागत संस्कृत विद्यालयों के छात्र/छात्राओं के लिए करवाया जाता है। उत्कृष्ट परिणाम वाले छात्र/छात्राओं को अकादमी समिति द्वारा निर्धारित नीति के अनुसार पुरस्कृत किया जाता है।

अखिल भारतीय नवोदित संस्कृत–कवि–प्रतियोगिता

इस प्रतियोगिता का आयोजन समाचार–पत्रों में विज्ञापन देकर किया जाता है तथा उत्कृष्ट कविता–पाठ के लिए नवोदित संस्कृत–कवियों को अकादमी समिति द्वारा निर्धारित नीति के अनुसार पुरस्कार प्रदान किये जाते हैं।

संस्कृत–नाट्य–समारोह

इस समारोह के लिए कॉमर्शियल कलाकारों द्वारा संस्कृत में प्रसिद्ध प्राचीन एवं नवीन विषयों पर आधारित नाटकों का मंचन किया जाता है। जैसे षोडश संस्कार, मृच्छकटिकम्, मेघदूतम् इत्यादि।

अखिल भारतीय संस्कृत शोध–निबन्ध–लेखन–प्रतियोगिता

समाचार पत्रों में विज्ञापन देकर पूरे भारत वर्ष से संस्कृत लेखकों से दिये गये निर्धारित विषय पर 250 पृष्ठों के शोध–लेख आमन्त्रित किए जाते हैं। विद्वानों से उनका मूल्यांकन कराकर उत्कृष्ट शोध–लेखों के लिए शोध–कर्ता विद्वानों को अकादमी समिति द्वारा निर्धारित नीति के अनुसार पुरस्कार दिये जाते हैं।

अखिल भारतीय–मौलिक–लघुनाटक–लेखन–प्रतियोगिता

समाचार पत्रों में विज्ञापन देकर पूरे भारत वर्ष से संस्कृत लेखकों से मौलिक लघुनाटक आमन्त्रित किये जाते हैं। उनका मूल्यांकन कराकर उत्कृष्ट कोटि की कृतियों के लिए रचनाकारों अकादमी समिति के द्वारा निर्धारित नीति के अनुसार पुरस्कार दिए जाते हैं।

अखिल भारतीय लघुकथा–लेखन–प्रतियोगिता

समाचार पत्रों में विज्ञापन देकर पूरे भारत वर्ष के विद्वानों से संस्कृत– लघुकथाएँ आमन्त्रित की जाती हैं। उनका मूल्यांकन करवाकर उत्कृष्ट कोटि की लघुकथाओं के लिए विद्वानों को समिति द्वारा निर्धारित नीति के अनुसार पुरस्कार दिये जाते हैं।

अखिल भारतीय श्लोकसमस्यापूर्ति–प्रतियोगिता

समाचार पत्रों में विज्ञापन देकर पूरे भारत वर्ष के विद्वानों से श्लोक आमन्त्रित किये जाते हैं, उनका मूल्यांकन करवाकर उत्कृष्ट कोटि की रचनाओं के लिए विद्वानों को अकादमी समिति द्वारा निर्धारित नीति के पुरस्कार दिये जाते हैं।

संस्कृत चलचित्र–अनुवाद प्रतियोगिता

महाविद्यालय स्तर पर आयोजित होनी वाली इस प्रतियोगिता में प्रतिभागी छात्र / छात्राओं द्वारा भारतीय चल–चित्रों के हिन्दी गीतों का संस्कृत अनुवाद किया जाता है।

संस्कृत एकल श्लोक गायन प्रतियोगिता

अकादमी 18 से 45 तक आयु वर्ग के संस्कृत प्रेमियों, छात्रों, शिक्षकों, विद्वानों के लिए संस्कृत एकल श्लोक गायन प्रतियोगिता का आयोजन करती है, जिसमें अकादमी द्वारा निर्धारित छन्द में प्रतिभागियों द्वारा चयनित श्लोकों का गायन करना होता है। पुरस्कृत प्रतिभागियों को निर्धारित नीति के अनुसार पुरस्कार राशि प्रदान की जाती है।

अखिल भारतीय सद्यः पद्य–रचना प्रतियोगिता

अकादमी अखिल भारतीय स्तर पर संस्कृत–कवियों एवं कवयित्रियों के लिए अखिल भारतीय सद्यः पद्य–रचना प्रतियोगिता का आयोजन करती है, जिसमें अकादमी द्वारा निर्धारित स्थान पर तीन घण्टे की समयावधि में अकादमी द्वारा दिये गये विषय पर पद्य–रचना करके प्रस्तुतीकरण के आधार पर कवि–कवयित्रियों को पुरस्कृत किया जाता है तथा उत्कृष्टता के क्रम से अकादमी नीति के अनुसार पुरस्कार राशि प्रदान की जाती है।

अध्ययन केन्द्र

अकादमी द्वारा समाचार–पत्रों में विज्ञापन देकर निम्नलिखित पाठ्यक्रमों के लिए नाम आमन्त्रित करके नाममात्र का प्रवेश शुल्क लेकर अध्ययन की व्यवस्था की जाती है।

व्यावहारिक संस्कृत अध्ययन केन्द्र

अकादमी द्वारा वर्ष 2017–18 से दिल्ली में 70 से अधिक केन्द्रों पर व्यावहारिक संस्कृत अध्ययन केन्द्र चलाये जाने की योजना के अन्तर्गत अनेक केन्द्र संचालित किये जा रहे हैं, इन अध्ययन केन्द्रों में दिल्ली के प्रत्येक उम्र के जिज्ञासुओं के लिए व्यावहारिक जीवन में प्रयोग होने वाले संस्कृत के श्लोक, मन्त्र तथा सूक्तियों के बारे में जानकारी एवं प्रतिदिन उपयोग होने वाले संस्कृत शब्दों की जानकारी तथा उनके अर्थ बताकर अध्ययन की व्यवस्था की जाती है।

अखिल भारतीय प्रशासनिक सेवा परीक्षा–संस्कृत–शिक्षण–केन्द्र

यह प्रशिक्षण उन छात्रों को दिया जाता है जो संस्कृत विषय लेकर आई० ए० एस० की परीक्षा उत्तीर्ण करना चाहते हैं।

जे.आर.एफ / नेट / एम.फिल परीक्षा संस्कृत–शिक्षण–केन्द्र

यह प्रशिक्षण उन छात्रों को दिया जाता है जो संस्कृत विषय से जे.आर.एफ. / नेट / एम.फिल की परीक्षाओं में भाग लेते हैं ऐसे विद्यार्थियों को परीक्षा की तैयारी करवायी जाती है।

ज्योतिष, कर्मकाण्ड तथा वेदों का पारम्परिक–अध्ययन

अकादमी द्वारा ज्योतिष–कर्मकाण्ड तथा वेदों के पारम्परिक अध्ययन हेतु दिल्ली के संस्कृत विद्यालयों व महाविद्यालयों में आवश्यकता को देखते हुए पारम्परिक आचार्य की व्यवस्था की जाती है।

संस्कृत शिक्षण कार्यशाला

संस्कृत शिक्षण को आधुनिक स्वरूप के अनुसार संस्कृत शिक्षकों को संस्कृत विषय के शिक्षण हेतु नई–नई प्रविधियों का ज्ञान देने के लिए अकादमी दिल्ली में संस्कृत शिक्षकों एवं संस्कृत छात्र शिक्षकों के लिए समय–समय पर कार्यशालाओं का आयोजन करती है।

संस्कृत नुक्कड़ नाटक समारोह

दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों में अकादमी द्वारा संस्कृत विद्यालयों के छात्रों के माध्यम से संस्कृत–नुक्कड़ नाटकों का आयोजन किया जाता है और छात्रों को पुरस्कृत किया जाता है।

संस्कृत–संगीत –संध्या का आयोजन
(सांस्कृतिक कार्यक्रम)

दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों में जन–सामान्य में संस्कृत के प्रति रुचि जागृत करने के लिए अकादमी द्वारा संस्कृत संगीत संध्याओं का आयोजन कराया जाता है। जिसके अन्तर्गत संगीत के उत्कृष्ट कलाकरों द्वारा संस्कृत के गीत व संस्कृत की उत्कृष्ट रचनाओं का गायन अथवा संस्कृत से सम्बद्ध (अन्य भाषायी रचनाओं तथा लोक–गीतों का गायन किया जाता है। प्रस्तुति हेतु दिल्ली अथवा राष्ट्रीय स्तर के कलाकारों को आमन्त्रित किया जाता है।

फ्यूजन म्यूजिक

संस्कृत के प्रति रुचि जागृत करने के लिए अकादमी द्वारा आधुनिक बैण्ड के माध्यम से राष्ट्रीय स्तर के कलाकारों को आमन्त्रित करके फ्यूजन म्यूजिक संगीत का आयोजन किया जाता है।

पाण्डुलिपि प्रकाशन–आर्थिक सहयोग

अकादमी द्वारा मौलिक संस्कृत लेखन को प्रोत्साहित करने के लिए संस्कृत के कवियों/लेखकों को ग्रन्थ प्रकाशन के लिए आर्थिक सहयोग दिया जाता है जो रु. 5000/– न्यूनतम से लेकर रु. 20,000/– अधिकतम हो सकती है। इसके लिए कुछ राशि पहले तथा कुछ राशि पुस्तक के प्रकाशन के बाद दी जाती है। सहयोग राशि पुस्तक के पृष्ठों पर आधारित होता है।

प्रशासनिक व्यवस्था

अकादमी के संविधान के अनुसार सचिव अकादमी का प्रशासनिक अधिकारी होता है। जो कि अकादमी की कार्यकारी समिति द्वारा निर्दिष्ट योजनाओं का कार्यान्वयन करता है। अकादमी के दायित्वों के संचालन के लिए सचिव द्वारा विभिन्न विभागों की स्थापना की है सूचना के अधिकार को पारदर्शी बनाने के लिए जनसूचना अधिकारी बनाया गया है। कार्यस्थल पर महिलाओं के यौन उत्पीड़न निवारण समिति का गठन किया गया है तथा जन–लोक शिकायतों का निवारण निरन्तर किया जाता है।

अनुदान

अकादमी को प्रतिवर्ष दिल्ली में संस्कृत भाषा के प्रचार–प्रसार के लिए दिल्ली सरकार द्वारा अनुदान राशि दी जाती है। इस अनुदान राशि का व्यय अकादमी नियमानुसार करती है। जिसका दिल्ली सरकार एवं भारत सरकार द्वारा प्रतिवर्ष लेखा परीक्षण होता है।

संस्कृत–पत्रिकाओं को विज्ञापन द्वारा आर्थिक सहयोग

संस्कृत–पत्रिकाओं और संस्कृत समाचार–पत्रों को अकादमी क्रियाकलापों/उपलब्धियों आदि से सम्बन्धित विज्ञापन देकर आर्थिक सहयोग दिया जाता है।

संस्कृत वाङ्मयोपायन–समारोह

अकादमी द्वारा दिल्ली के विभिन्न क्षेत्रों में स्थित पारम्परिक संस्कृत विद्यालयों, महाविद्यालयों, विद्यापीठों, गुरुकुलों के पुस्तकालयों हेतु संस्कृत के शास्त्रों का निःशुल्क वितरण किया जाता है।

संस्कृत शिक्षण योजना

इस योजना के अन्तर्गत दिल्ली सरकार के विभिन्न विद्यालयों में वर्तमान में 43 संस्कृत शिक्षक एवं शिक्षिकाएं कार्यरत हैं जो 6 से लेकर 12वीं कक्षा तक शिक्षण का कार्य करते हैं।

नोटः– कोविड महामारी के कारण अकादमी द्वारा किये जाने वाले नियमित कार्यक्रम दिल्ली डिजास्टर मैनेजमेंट अथॉरिटी (DDMA) के दिशा निर्देशों के उपरान्त आयोजित किये जायेगें।

अकादमी संस्कृत की गतिविधियों के लिए समय समय पर वेबिनार के माध्यम से प्रतिमाह नमोनमेष विषय से विभिन्न संस्कृतपरक विषयों पर संस्कृत विद्वानों का व्याख्यान करवाती रहती है।

वर्ष 2021-22 में आयोजित कार्यक्रम

क्र.सं.	दिनांक	कार्यक्रम का नाम	स्थान	वक्ता
1.	20.06.2021	योगदिवस पर व्याख्यान माला (योगसंस्थान के सहयोग से)	वेबिनार	डॉ0 अरुण कुमार झा
2.	26.06.2021	भारतीय यौगिक परम्परायाः सातत्यम्	वेबिनार	प्रो0 मधुसूदन पेन्ना
3.	29.06.2021	दक्षिणात्य भाषा सुसंस्कृत नवोन्मेधाः	वेबिनार	जातावधानी आर.गणेश
4.	26.07.2021	संस्कृत सम्भाषण का इतिहास एवं प्रभाव	वेबिनार	डॉ0 सदानन्द दीक्षित
5.	10.08.2021	हिन्दी साहित्य में संस्कृत का नवोन्मेष	वेबिनार	प्रो0 राधाबल्लभ त्रिपाठी
6.	13.08.2021	स्वतंत्रता दिवस कवि सम्मेलन	वेबिनार	कविगण द्वारा काव्यपाठ
7.	23.08.2021	संस्कृत काव्यों में नये प्रयोग	वेबिनार	डॉ0 हर्ष देव माधव
8.	28.08.2021	संस्कृत साहित्य के इतिहास लेखन के नये आयाम	वेबिनार	डॉ0 वेदवीर आर्य
9.	18.10.2021	महर्षि वाल्मीकि रामायण की आधुनिक समय में प्रासंगिता	वेबिनार	प्रो0 राधाबल्लभ त्रिपाठी
10	19.10.2021	रामायण पर प्रश्न मंच	वेबिनार	छात्रों की प्रतिभागिता
11	23.10.2021	महर्षि वाल्मीकि प्रकाटोत्सव	त्यागराज स्टेडियम	छात्रों को पुरस्कार वितरण
12	01.11.2021	पाणिनीय प्रक्रिया प्रविधि में उद्भवित नवीनतायें	वेबिनार	डॉ0 पुष्पा दीक्षित
13	08.12.2021	''के. कृष्णभट्ट का छन्दसाहित्य ''		डॉ0 बी ए शशिकिरण
14	20.12.2021	वैश्विक मनोविज्ञान अनुशासन में भारतीय सामग्री की स्वीकार्यता	वेबिनार	प्रो0 गिरीश्वर मिश्र
15	01.11.2021	पाणिनीय प्रक्रिया प्रविधि में उद्भवित नवीनतायें	वेबिनार	प्रो0 पुष्पा दीक्षित
16	24.01.2022	गणतंत्र दिवस संस्कृत कवि सम्मेलन	वेबिनार	कविगण द्वारा काव्यपाठ
17	12.02.2022	भर्तृहरि का शब्दब्रह्मसिद्धान्त	वेबिनार	डॉ0 कान्ता भाटिया

प्रैस विज्ञप्ति

दिनांक 08.12.2021

संस्कृत वाङ्मय में सामान्यत: लय को बताने के लिये छन्द शब्द का प्रयोग होता है - प्रो शशिकिरण

साहित्य को छन्दरूप में लिखने से साहित्य में सजीविता आ जाती है - डॉ0 कान्ता भाटिया

साहित्य सृजन को व्यवस्थित दिशा देने के लिये छन्दों का बहुत महत्त्वपूर्ण योगदान होता है - डॉ0 अरुण कुमार झा

दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार द्वारा संस्कृत दिवस के उपलक्ष्य में ''के. कृष्ण भट्ट का छन्द साहित्य'' विषय पर एक वेबिनार का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता के रूप में दक्षिण भारत के प्रसिद्ध तकनीकी विज्ञान एवं संस्कृत भाषा के विद्वान् प्रो० बी.एन. शशिकिरण को आमंत्रित किया गया था। डॉ० प्रो० बी.एन. शशिकिरण का वक्तव्य कर्नाटक में प्रचलित प्रसिद्ध छन्दशास्त्र के विद्वान डॉ० कृष्ण भट्ट द्वारा रचित छन्द शास्त्र पर आधारित था। डॉ० कृष्ण भट्ट आयुर्वेद के महान चिकित्सक थे। उन्होंने छन्दशास्त्र की रचना कन्नड़ भाषा में की थी। संस्कृत भाषा में निहित व्याकरण को सरल रूप में कन्नड़ भाषा में लिखा, जिसका अनुवाद बाद में संस्कृत में किया गया। इस पुस्तक का सम्पादन प्रो० शशिकिरण ने किया। संस्कृत वाङ्मय में सामान्यत: लय को बताने के लिये छन्द शब्द का प्रयोग किया गया है। इस प्रकार की व्यवस्था में मात्र अथवा वर्णों की संख्या, विराम, गति, लय तथा तुक आदि के नियमों को भी निर्धारित किया गया है, जिनका पालन साहित्यकार को करना होता है। संस्कृत वाङ्मय में सामान्यत: लय को बताने के लिये छन्द शब्द का प्रयोग किया गया है। जिनसे काव्य में लय और रंजकता आती है। छोटी-बड़ी ध्वनियां, लघु-गुरु उच्चारणों के क्रमों में, मात्र बताती हैं और जब किसी काव्य रचना में ये एक व्यवस्था के साथ सामंजस्य प्राप्त करती हैं तब उसे एक शास्त्रीय नाम दे दिया जाता है और लघु-गुरु मात्राओं के अनुसार वर्णों की यह व्यवस्था एक विशिष्ट नाम वाला छन्द कहलाने लगती है। छन्द कविता की एक रचना शैली है। इसमें शब्दों की रचना, वर्णो की संख्या, अक्षरों की संख्या और क्रम, मात्रा की गणना आदि के अनुसार नियोजन किया जाता है। प्रो० शशिकिरण ने इस विशेष वक्तव्य में संस्कृत के विभिन्न छन्दों पर किये गये प्रयोगों को भी विस्तार से बताया।

यह वेबिनार अकादमी के सचिव डॉ० अरुण कुमार झा के सानिध्य में हुआ। डॉ० झा ने कहा कि संस्कृत साहित्य में छन्दों का विशेष महत्त्व है। इससे साहित्य को एक व्यवस्थित दिशा मिलती है। जिस प्रकार से साहित्य को व्यवस्थित बनाने के लिये व्याकरण जरूरी है उसी प्रकार साहित्य सृजन को व्यवस्थित दिशा देने के लिये छन्दों का भी बहुत महत्त्वपूर्ण योगदान है। अकादमी का संकल्प है कि संस्कृत नवोन्मेश ने क्रम में एक व्याख्यान सिरीज निरन्तर आयोजित होती रहे, जिससे लोगों को संस्कृत के विषय में नयी जानकारी मिल सके।

इस अवसर पर कार्यक्रम का संचालन करते हुए एवं मुख्य अतिथि के रूप में अकादमी की उपाध्यक्षा डॉ० कान्ता भाटिया ने कहा कि छन्द साहित्य बहुत विस्तृत है। संस्कृत साहित्य में कई प्रकार के छन्दों का उल्लेख है। जिसमें अनुष्टुप, शार्दुलविक्रोडित, शिखरणी, इन्दवज्रा, मन्दाक्रान्ता, उपेन्द्रवज्रा, मालिनो वसन्त तिलका आदि

छन्द प्रसिद्ध हैं । साहित्य को छन्दरूप में लिखने से साहित्य में सजीविता आ जाती है। लोगों को अधिक समझ आ जाती है।

इस अवसर पर प्रो0 शशिकिरण के बारे में विस्तार से बताते हुये अकादमी के सदस्य डॉ0 रणजीत बेहेरा ने कहा कि प्रो० शशिकिरण तकनीकि विज्ञान में स्नातक के साथ संस्कृत व्याकरण के लब्दप्रतिष्ठित विद्वान हैं। विज्ञान एवं संस्कृत का यह समन्वय बहुत कम देखने को मिलता है। इन्होंने अपनी प्रतिभा के अनुरूप अनेक संस्कृत पुस्तकों का सम्पादन कर प्रकाशित किया है। इन्हें समय समय पर सरकार एवं संस्थाओं द्वारा अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। इन्होंने साहित्य रचना के अनेक प्रयोगों का समावेश कर विज्ञान एवं संस्कृत के समावेश में अन्तराष्ट्रीय ख्याति अर्जित की है। आज के व्याख्यान विषय के माध्यम से अकादमी जन सामान्य के बीच के संस्कृत काव्य के लेखन में छन्दों के बारे में जानकारी देना है। इस में भी उन्होंने कन्नड़ भाषा में लिखित डॉ0 कृष्ण भट्ट के छन्द साहित्य को लिया है। जिसके बारे में विस्तार से उन्होंने बताया है।

इस अवसर पर कई गणमान्य व्यक्ति जूम-ऐप के माध्यम से वेबिनार से जुड़े रहे। इस वेबिनार को अकादमी के यूटयूब चैनल के माध्यम से प्रसारित किया गया ।

प्रेस विज्ञप्ति

दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली सरकार

प्लाट नं.-5, झण्डेवालान, करोल बाग, नई दिल्ली -5

दिनांक 18.10.2021

रामायण में उल्लिखित सामाजिक-राजनीतिक संदेश आज पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक हैं

-प्रो० राधाबल्लभ त्रिपाठी

यदि विश्व को महानतम संस्कृति देखनी है तो रामायण से ही देखी जा सकती है

- डॉ० अरुण कुमार झा

रामायण में लगभग 24000 श्लोक हैं जिनमें महर्षि ने राम को आपना आदर्श माना है

- डॉ० कान्ता भाटिया

महर्षि बाल्मीकि के जीवन से हमें बहुत शिक्षा मिलती है। किस प्रकार से उनके जीवन में परिवर्तन आया और उन्होंने रामायण ग्रन्थ की रचना में सम्पूर्ण भारतीय संस्कृति का समावेश कर दिया। संस्कृत भाषा के आदिकवि महर्षि वाल्मीकि ने विश्व को रामायण की रचना के माध्यम से विश्व को एक आदर्श संस्कृति दी, जो आज भी विश्व के लिये प्रेरणा देती आ रही है। भारतीय संस्कृति के सभी पक्ष महर्षि वाल्मीकि ने रामायण में लिखे गये हैं। महर्षि वाल्मीकि राम के समकालीन थे अत: उनका ग्रन्थ रामायण प्रतिपादित सामाजिक व्यवस्था औरतत्कालीन समाज का सच्चा दर्पण माना जाता है। रामायण में शामिल सामाजिक-राजनीतिक संदेश पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक हैं। राम संघर्ष की प्रतिमूर्ति थे। उन्होंने उपनिवेशवाद के विरुद्ध बहुत बडा संदेश दिया था। आधुनिक समय में जिंदगी जीने के लिए जो तत्व, आदर्श, नियम और धारणा जरूरी होती है वे सभी रामायण में मिलते हैं। आधुनिक जीवन में रामायण से हम सीख ले सकते हैं। इसके अलावा हम रामायण की प्रासंगिकता को अपने जीवन में भी उतार सकते हैं। रामायण की सबसे बड़ी सीख है बुराई पर हमेशा अच्छाई की जीत। वहीं आज हम बात करेंगे राम के उन आदर्शों के बारे में जिसे आम जीवन में लोगों को जरूर अपनाना चाहिए।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली सरकार, द्वारा झण्डेवालान करोलबाग में महर्षि बाल्मीकि जयन्ती के उपलक्ष्य में आयोजित वेबिनार के मुख्य वक्ता पूर्व कुलपति प्रो० राधाबल्लभ त्रिपाठी ने व्यक्त किये। डॉ० त्रिपाठी ने आगे कहा कि कई शताब्दियों पूर्व लिखी गई रामायण आज भी विश्व में सबसे अधिक लोकप्रिय एवं आदर्श संस्कृति का प्रतीक है। रामायण को पढ़ने से पहले महर्षि वाल्मीकि को समझना को बेहद जरूरी है। रामयण के बारे में विस्तार से बताते हुये प्रो० त्रिपाठी ने अनेक उदाहरणों से महर्षि के जीवन के बारे में अनेक उदाहरण दिये जो आज के जीवन के लिये बहुत उपयोगी हैं। उन्होंने कहा कि रामायण में बताया गया है कि राम का आचरण काफ़ी विनम्र है, वह हर किसी से समान व्यवहार रखते हैं। ऐसे में समाज में किसी से भी भेदभाव नहीं करना चाहिए। जाति, धर्म, लिंग आदि के नाम पर भेदभाव कर दूसरो को नीचा दिखाना गलत है। रामायण की शिक्षा से हम सीख सकते हैं कि सच्चा मानव वही होता है जो सबके साथ समान व्यवहार से पेश आए।

इस अवसर पर अकादमी के सचिव डॉ० अरुण कुमार झा ने कहा कि रामायण में महर्षि वाल्मीकि ने आदर्श संस्कृति को निरूपित करते हुये परिवार में भाई का भाई से, पिता का पुत्र से माता का पुत्र से शत्रु का मित्र से किस प्रकार का व्यवहार होना चाहिये के साथ साथ राजा के कर्तव्य एवं मंत्रियों का कार्य आदर्श राज व्यवस्था आदि ये सभी शिक्षाओं को इस प्रकार से निहित किया है कि रामायण को पढ़ने से व्यक्ति सम्पूर्ण भारतीय संस्कृति से अभिभूत हो जाता है। विश्व में कोई ऐसा साहित्य नहीं है जो पूर्ण रूप से अपने आप में पूर्ण हो परन्तु रामायण अपने आप में पूर्ण ग्रन्थ है। विश्व का सबसे पहला काव्य श्लोक महर्षि वाल्मीकि ने ही बनाया। यदि विश्व को महानतम संस्कृति देखनी है तो रामायण से ही देखी जा सकती है ।

इस अवसर पर अकादमी की उपाध्यक्षा डॉ० कान्ता भाटिया ने कहा कि महर्षि वाल्मीकि संस्कृत के आदि कवि के साथ भारतीय संस्कृति के महान लेखक हुए इन्होने ने कठोर तप किया। तप के समय उनके पूरे शरीर पर दीमक ने बॉबी बना दी थी जिस कारण उनका नाम वाल्मीकि पड़ा। कठोर तप करते समय उन्हें रामायण की सभी घटनाओं का ज्ञान हो गया जिससे उन्होंने रामायण की स्थापना की। कालान्तर में वे महान ऋषि बने। डॉ० भटिया ने कहा कि संस्कृत साहित्य में ऋषियों का सबसे अधिक योगदान रहा है जिसमें व्यास, विश्वमित्र, वाल्मीकि आदि प्रसिद्ध है। रामायण में लगभग 24000 श्लोक हैं जिनमें राम को आपना आदर्श रखते हुये पूर्ण भारतीय आदर्श संस्कृति को स्थापित किया गया है।

इस अवसर पर अनेक गणमान्य व्यक्ति इस वेबिनार से जुडे हुये थे।

प्रैस विज्ञप्ति

दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली सरकार
प्लाट नं.-5, झण्डेवालान, करोलबाग, नई दिल्ली 110005

दिनांक 13.08.2021

दिल्ली सरकार द्वारा देश के 75 वें स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य जूम-ऐप के माध्यम से ऑनलाईन **''अखिल भारतीय संस्कृत कवि सम्मेलन''** का आयोजन किया गया ।

<u>राष्ट्रीय संस्कृत कवि सम्मेलन का आयोजन युवा वर्ग को प्रेरणा स्रोत है</u>

-मोहमद ए आबिद

राष्ट्र याद कर रहा है आजादी के लिये बलिदान हुये शहीदों को - अरुण कुमार झा

दिल्ली में संस्कृत भाषा के विकास के लिये अकादमी निरन्तर प्रयासरत है -डॉ० कान्ता भाटिया

संस्कृत भारत को प्राचीन भाषा के साथ साथ अपने विशाल साहित्य रचनाओं के कारण विश्व की सबसे समृद्ध भाषा है। भारत की आजादी में राष्ट्रीय या क्षेत्रीय सभी भाषाओं एवं साहित्यकारों का अपना अपना योगदान रहा है। जिस कारण समाज में आजादी की प्रेरणा मिली और कवियों एवं साहित्यकारों ने समाज को प्रेरणा देने वाले साहित्यों की रचना की। संस्कृत भाषा में इस प्रकार की अनेक कवितायें लिखी गई।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली सरकार द्वारा देश के 75 वें स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य जूम-ऐप के माध्यम से आयोजित ऑनलाईन **''अखिल भारतीय संस्कृत कवि सम्मेलन''** के मुख्य अतिथि दिल्ली सरकार के कला संस्कृति एवं भाषा विभाग के विशेष सचिव श्री मोहमद ए. आबिद जी ने व्यक्त किये। श्री आबिद ने आगे कहा कि संस्कृत अकादमी को मुबारकबाद है कि उन्होंने आज संस्कृत कवि सम्मेलन का आयोजन किया। कोविड बीमारी के कारण ये प्रत्यक्ष रूप से कार्यक्रमों का आयोजन नहीं हो पा रहा है। हर भाषा के कवियों ने समाज को नई शिक्षाएँ दी हैं जिस कारण देश अपनी संस्कृति की जड़ों को मजबूती से आगे बढ़ाया है। संस्कृत ने देश को नई पहचान दी है। सभी संस्कृत कवियों का दिल्ली सरकार की ओर से में स्वागत करती हूँ।

अकादमी के सचिव डॉ० अरुण कुमार झा ने इस अवसर पर आमंत्रित संस्कृत कवियों एवं अतिथियों का स्वागत एवं परिचय कराया और कहा कि स्वतंत्रता दिवस के इस राष्ट्रीय पर्व पर दिल्ली सरकार की ओर से आयोजित इस संस्कृत कवि सम्मेलन से राष्ट्रीय एकता एवं अखण्डता को मजबूती मिलती है। इस प्रकार के राष्ट्रीय पर्वों के आयोजन से आजादी के वीर स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा किये गये निस्वार्थ बलिदान को देश की युवा पीढ़ी को बताने का प्रयास किया जाता है। इस कवि सम्मेलन में देश के प्रतिष्ठित संस्कृत कवियों को संस्कृत काव्य पाठ के लिये आमंत्रित किया गया। जिन्होंने राष्ट्र भक्ति एवं राष्ट्र गौरव पर आधारित संस्कृत काव्य पाठ किया। कवि सम्मेलन का शुभारम्भ वैदिक मंगलाचरण से हुआ।

इस काव्य शृंखला में दिल्ली के पद्म श्री से विभूषित कवि डॉ० रमाकान्त शुक्ल ने देश के महत्त्व को समझाते हुये सम्पूर्ण देश के भौगोलिक क्षेत्रों के बारे में विस्तार से काव्यपाठ किया।

मध्य प्रदेश भोपाल से प्रो० राधाबल्लभ त्रिपाठी जी ने कुछ पद्यों में भारत माँ एवं नर्मदा नदी की वन्दना करते हुए काव्या पाठ किया।

अहमदाबाद से जुडे संस्कृत कवि डॉ० हर्षदेव माधव ने अपने काव्यपाठ में राष्ट्र की उन्नति के लिए लिए सैनिकों, खिलाड़ियों एवं कारोनाकाल में चिकित्सकों द्वारा किये गये महान कार्य पर आधारित काव्यपाठ किया।

डॉ० योगिता ने भारत की सुन्दरता एवं अखण्डता किस प्रकार हमारे देश की संजीवनी बनती है और हमें जीवनदायिनी तथा राष्ट्र के विकास में किस प्रकार से देश वासियों में नया जोश लाती है पर अपना काव्य पाठ किया।

इसी क्रम में उत्तर प्रदेश से जुडे कविवर डॉ० विध्येश्वरी प्रसाद मिश्र ने देश भक्ति से परिपूर्ण काव्यपाठ किया जिसमें कई सूक्तियों का वर्णन किया जो कि प्रचलित भी हैं।

दिल्ली से ही डॉ. भागीरथी नन्द ने भी इस काव्यपाठ के द्वारा अपनी सुमधुर आवाज के द्वारा काव्यापाठ किया जिससे समस्त संस्कृतज्ञ भाव विभोर होकर काव्य का रसासवादन करने लगे।

कवि सम्मेलन में संस्कृत विभाग के आचार्य डॉ. बलराम शुक्ल ने राष्ट्र की एकता में संस्कृत के महत्व का वर्णन किया और देश को संस्कृत क्या देता है वह सार अपनी कविता के माध्यम से वर्णित किया । उत्तर प्रदेश से डॉ० नवलता ने आजादी के बाद देश को किस प्रकार से श्रेष्ठ बनाया जा सकता है कविता के माध्यम से अपने विचार रखे। बैंगलोर से डॉ० शंकर राजारमन की कविताओं में ओज एवं जोश के साथ राष्ट्रीय एकता में हमें अपने आप को समर्पित करने की प्रेरणा से ओत प्रोत थी। केरल की एच. पूर्णिमा ने काव्यपाठ के माध्यम से इस दिन को राष्ट्र के प्रति हर व्यक्ति का क्या दायित्व है राष्ट्र निर्माण में किस की क्या आवश्यकता है इसका अवलोकन कर हम राष्ट्र के प्रति अपनी निष्ठा का परिचय दिया।

कवि सम्मेलन का शुभारम्भ प्रसिद्ध संस्कृत विदुषी एवं शिक्षाविद डॉ० कान्ता भाटिया ने किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि संस्कृत संसार की प्राचीनतम भाषा है।

इस अवसर पर दिल्ली विश्वविद्यालय के सेण्ट स्टीफन्स महाविद्यालय के संस्कृत विभाग की आचार्य डॉ० आशुतोष दयाल माथुर ने सभी कवियों के प्रति हार्दिक कृतज्ञता व्यक्त करते हुये धन्यवाद ज्ञापित किया।

कवि सम्मेलन का संचालन दिल्ली के युवा संस्कृत कवि डॉ० परमानन्द जी ने अपनी मधुर वाणी एवं कवियों को विभिन्न छन्दों से उनकी उपमाओं का वर्णन कर कवियों की क्रमशः ऑनलाईन संस्कृत काव्य पाठ हेतु आमन्त्रि किया जिससे समस्त काव्यरसों एवं उपस्थित विद्वानों में आनन्दानुभूति का अनुभव हो रहा था। इस अवसर पर अनेक गणमान्य संस्कृत जिज्ञासुओं ने काव्यपाठ का आनन्द लिया।

प्रैस विज्ञप्ति/प्रकाशनार्थ

दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली सरकार
प्लाट नं-5, झण्डेवालान, करोलबाग नई दिल्ली-5

दिनांक 20.06.2020

शरीर को स्वस्थ रखने के लिये कुछ समय योग करना आवश्यक है -डॉ0 अरुण कुमार झा
भारतीय योग ने विश्व को नई दिशा दी है - डॉ0 अरुण कुमार झा
शरीर, मन और आत्मा का समत्व ही योग है- प्रो0 महेश प्रसाद सिलोड़ी

शरीर को स्वस्थ रखने के लिये कुछ समय योग के लिये निकालना आवश्यक है। योग के माध्यम से हम अपने दैनिक जीवन को सुधार सकते हैं। योग से हमें नई अनुभूति मिलती है। सरकार ने अपने प्रयासों से योग जो कि अनन्तकाल से शरीर को स्वस्थ बनाने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका बनाये हुये है, उसे विश्व स्तर पर ले जाने में बहुत कार्य किया। आज विश्व के अधिकांश देशों ने योग को पठन-पाठन के साथ-साथ नित्य जीवन शैली में अपना लिया है। 21 जून को प्रति वर्ष अन्तराष्ट्रीय योग दिवस के रूप में संयुक्त राष्ट्र संघ को ओर से मनाया जाता है।

ये विचार दिल्ली में अध्यात्म योग संस्थान दिल्ली के द्वारा आयोजित एक दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय वेबिनार संगोष्ठी में मुख्य अतिथि के रूप में दिल्ली संस्कृत अकादमी के सचिव डॉ० अरुण कुमार झा ने व्यक्त किये। डॉ० झा ने आगे कहा कि वर्तमान में योग के दो पहलू हैं एक अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध स्थापित करना। भारत का अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर विभिन्न देशों से सम्बन्ध बनाने में योग का बहुत बड़ा योगदान रहता है। दूसरा योग अध्यात्म से जुड़ा होने के कारण स्वास्थ्य के लिये बहुत आवश्यक है। शरीर को निरोगी रखने के लिये योग की जरूरत है। भारतीय योग दर्शन की बहुत बड़ी सीमा है। इसका दर्शन अनन्त है। डॉ० झा ने इस अवसर पर यह भी बताया कि कोरोना महामारी के कारण दिल्ली संस्कृत अकादमी योग के पाठ्यक्रमों को विगत वर्ष नहीं चला सकी परन्तु इस वर्ष अकादमी प्रयास करेगी कि पहले नियमित कक्षायें चलाई जायेगी नहीं तो ऑन लाईन के माध्यम से योग की कक्षायें चलाने का पूर्ण प्रयास किया जायेगा।

इस अवसर पर श्री लाल बहादुर शास्त्री संस्कृत विद्यापीठ के योग विभाग के निदेशक प्रो० महेश सिलोड़ी ने कहा कि योग को महर्षि पतंजलि ने सूत्रों के रूप प्रस्तुत किया। योग के लिये अलग-अलग परिभाषाएँ दी गई हैं जिसमें पतंजलि योग दर्शन, सांख्य दर्शन, विष्णुपुराण श्रीमद्भगवतगीता आदि में योग का विस्तृत वर्णन मिलता है। योग के 8 अंग होते हैं। जिसमें यम, नियम, आसन, प्रणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान एवं समाधि हैं। योग से अनेक रोग ठीक हो जाते हैं इसलिये हमें प्रतिदिन योग के लिये अवश्य समय निकालना होगा।

संगोष्ठी का संचालन श्री लाल बहादुर शास्त्री केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के योग विभाग के आचार्य डॉ० रमेश कुमार ने किया उन्होंने कहा कि योग के विशेष आसनों को नियमित रूप से करने से हमारे जीवन में नई उर्जा आती है। हमारा प्रयास होना चाहिये कि हम आसानी से योग सीख सकें और दूसरों को भी सिखा सकें। योग को सुचारु रूप से चलाने के लिये इसके निरन्तर अभ्यास की जरूरत होती है। जितना अभ्यास होगा योग में आप उतने ही दक्ष होंगे।

इस अवसर पर कई गणमान्य व्यक्तियों ने अपने विचार व्यक्त किये।

प्रैस विज्ञप्ति

दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली सरकार
प्लाट नं-5, झण्डेवालान, करोलबाग नई दिल्ली-5

दिनांक 28.08.2021

संस्कृत भाषा के विकास एवं इतिहास पर व्याख्यान

संस्कृत साहित्य का इतिहास लेखन एवं तिथि निर्धारण साहित्यिक साक्षों के आधार पर न करके कुछ कल्पित मानकों को आधार मान कर किया गया है - डॉ० वेदवीर आर्य

व्याख्यानमालाओं से लोगों को संस्कृत के विषय में नयी जानकारी मिलती है - डॉ0 अरुण कुमार झा

दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार द्वारा ''संस्कृत साहित्य का इतिहास लेखन के नये आयाम'' विषय पर एक वेबिनार व्याख्यान का आयोजन किया गया। इस अवसर पर मुख्य वक्ता भारतीय रक्षा मंत्रालय के संयुक्त सचिव डॉ० वेदवीर आर्य को आमंत्रित किया गया था। इस अवसर पर डॉ० वेदवीर आर्य ने कहा कि संस्कृत साहित्य का वर्तमान में सही स्वरूप लोगों के सामने नहीं है। औपनिवेशिक काल में संस्कृत साहित्य का लेखन एवं तिथि निर्धारण को साहित्यिक साक्षों के आधार पर न करके कुछ कल्पित मानकों को आधार मान कर किया गया है जिसके कारण संस्कृत इतिहास के कालक्रम निर्धारण में अनेक दोष उत्पन्न हो गये हैं जिसका निराकरण आज तक नहीं हो पाया है। परन्तु मैंने नये अनुसंधान संस्कृत साहित्य के परम्परिक कालक्रमों पुन: स्थापित करने की दिशा में कुछ तत्थों के साथ कार्य किया है जिस पर गंभीर विचार विमर्श की जरूरत है। डॉ० वेदवीर ने कहा कि 784 ई. से पहले संस्कृत साहित्य पर कोई विवाद नहीं था विदेशी आक्रमणों के बाद संस्कृत साहित्य के इतिहासिक ग्रन्थों को नष्ट कर या पाश्चात्य साहित्यकारों ने इसके अर्थ को सही न समझ कर या पूर्वाग्रह वर्ष कुछ सीमित मानकों के आधार पर संस्कृत साहित्य के इतिहास को लिखा वही इतिहास हमें आज तक पढ़ाया जा रहा है। किसी ने इस पर नये सिरे से शोध करने की नहीं सोची। संस्कृत साहित्य का इतिहास जानने के लिये शक् सम्वत बहुत जरूरी है। प्राचीन संस्कृत साहित्य का इतिहास वैदिक साहित्य एवं चारों युगों के आधार पर किया जाना चाहिये। कई साहित्यकार दो या तीन हुये हैं जिसके कारण उनके वारे में जानने के लिये अन्य साहित्यकारों या तत्कालीन राजाओं के इतिहास को भी जानना जरूरी है। विडम्बना ये है कि संस्कृतज्ञों को इतिहास नहीं पता तथा इतिहासकारों को संस्कृत का ज्ञान नहीं है जिस कारण सही ज्ञान नही आ पा रहा है। डॉ० वेदवीर शास्त्री ने अनेक गन्थों एवं साहित्य लेखन के आधार पर क्रमश: संस्कृत साहित्य के विकास के वारे में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने सूर्य सिद्धान्त एवं नक्षत्र विज्ञान के आधार पर कालगणना कर संस्कृत साहित्य के इतिहास को समझाने का प्रयास किया। उन्होंने कहा कि नासा ने एक ऐसा सॉफ्टवेयर बनाया है जो कई साल पीछे एवं आगे की गणना कर सकता है इसके आधार पर भी किया जा सकता है।

यह वेबिनार अकादमी के सचिव डॉ० अरुण कुमार झा के सान्निध्य में हुआ। डॉ० झा का संकल्प है कि संस्कृत नवोन्मेश ने क्रम में एक व्याख्यान सीरिज निरन्तर आयोजित होती रहे जिससे लोगों को संस्कृत के विषय में नयी जानकारी मिल सके।

इस अवसर पर डॉ० वेदवीर आर्य जी के बारे में परिचय कराते हुये डॉ० पंकजा घई कौशिक ने कहा कि डॉ0 वेदवीर आर्य संस्कृत विषय में दिल्ली विश्वविद्यालय के स्नातक हैं तथा वर्ष 1997 बैच के भारतीय प्रशासनिक सेवा के भारतीय रक्षा लेखा सेवा में चयनित हुये। यह परीक्षा इन्होंने संस्कृत मुख्य विषय के रूप में उत्तीर्ण की। संस्कृत के प्रति गहरी रुचि होने के कारण निरन्तर संस्कृत के बारे में शोध मे लगे रहते हैं। संस्कृत साहित्य के नये स्वरूप के लेखन पर इन्होंने बहुत कार्य किया है।

कार्यक्रम का संचालन अकादमी की उपाध्यक्षा डॉ० कान्ता भाटिया ने किया और कहा कि संस्कृत एक साहित्य ही नहीं इसमें सभी विषयों का समावेश है। भारतीय संस्कृति एवं संस्कृत दोनों एक दूसरे के पूरक हैं।

व्याख्यानमाला के समापन पर दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के आचार्य डॉ० आशुतोष दयाल माथुर ने कहा कि इस प्रकार के व्याख्यान से संस्कृत के युवा छात्रों शोधकर्ताओं को बहुत लाभ होगा तथा वे संस्कृत के नये क्षेत्रों पर अपना शोध कार्य करेंगे।

इस अवसर पर कई गणमान्य व्यक्ति ज़ूम-ऐप के माध्यम से वेबिनार से जुड़े रहे। इस वेबिनार को अकादमी के यूटयूब चैनल के माध्यम से प्रसारित किया गया।

प्रैस विज्ञप्ति

दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली सरकार

प्लाट नं-5, झण्डेवालान, करोलबाग नई दिल्ली-5

दिनांक 20.12.2021

मनोविज्ञान वह विषय है जिसमें मानव अपने वातावरण से सीखता कैसे है - प्रो0 गिरीश्वर मिश्र

इस का आधुनिक मनोविज्ञान का प्रारम्भ भारत में 1800 वीं शताब्दी में हुआ-डॉ कान्ता भाटिया

संस्कृत अकादमी का प्रयास है कि संस्कृत में निहित ज्ञान विज्ञान को अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाई जा सके-डॉ0 अरुण कुमार झा

दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार द्वारा संस्कृत नवोन्मेश के अन्तर्गत ''वैश्विक मनोविज्ञान अनुशासन में भारतीय सामग्री की स्वीकार्यता'' विषय पर ऑनलाईन जूम-एप के माध्यम से वेबिनार व्याख्यानमाला का आयोजन किया गया। इस व्याख्यानमाला के मुख्य वक्ता महात्मागांधी अन्तरराष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय, वर्धा के पूर्व कुलपति प्रो० गिरीश्वर मिश्र थे। इस अवसर पर प्रो० गिरीश्वर मिश्र ने कहा कि यह मनोविज्ञान की वह शाखा है जिसमें इस बात का अध्ययन किया जाता है कि मानव अपने वातावरण में सीखता कैसे है तथा शैक्षणिक क्रियाकलाप अधिक प्रभावी कैसे बनाये जा सकते हैं। वैश्विक मनोविज्ञान दो शब्दों के योग से बना है- 'वैश्विक' और 'मनोविज्ञान'। दूसरे शब्दों में, यह मनोविज्ञान का व्यावहारिक रूप है और शिक्षा की प्रक्रिया में मानव व्यवहार का अध्ययन करने वाला विज्ञान है। मानव व्यवहार को बनाने की दृष्टि से जब व्यवहार का अध्ययन किया जाता है तो अध्ययन की इस शाखा को शिक्षा मनोविज्ञान के नाम से संबोधित किया जाता है। अत: कहा जा सकता है कि शिक्षा मनोविज्ञान शैक्षणिक स्थितियों में मानव व्यवहार का अध्ययन करता है। दूसरे शब्दों में शैक्षिक समस्याओं का वैज्ञानिक व संगठन से समाधान करने के लिए मनोविज्ञान के आधारभूत सिद्धांतों का उपयोग करना ही शिक्षा मनोविज्ञान की विषय वस्तु है। शिक्षा के सभी पहलुओं जैसे शिक्षा के उद्देश्यों, शिक्षण विधि, पाठ्यक्रम, मूल्यांकन, अनुशासन आदि को मनोविज्ञान ने प्रभावित किया है। बिना मनोविज्ञान की सहायता के शिक्षा प्रक्रिया सुचारु रूप से नहीं चल सकती। शिक्षा मनोविज्ञान से तात्पर्य शिक्षण एवं सीखने की प्रक्रिया को सुधारने के लिए मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का प्रयोग करने से है। शिक्षा मनोविज्ञान शैक्षिक परिस्थितियों में व्यक्ति के व्यवहार का अध्ययन करता है।

इस अवसर पर कार्यक्रम की प्रस्तावना एवं अकादमी के वरिष्ठ सदस्य सेण्टस्टीफेन्स महाविद्यालय के संस्कृत विभाग के आचार्य डॉ0 आशुतोष दयाल माथुर ने कहा कि आचार्य प्रवर प्रो0 गिरीश्वर मिश्र ने अपने जीवन में शिक्षण का कार्य अनेक महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों में किया। गोरखपुर विश्वविद्यालय में 1970 से 1978 तक सहायक आचार्य, 1978 से 1983 तक इलाहाबाद विश्वविद्यालय में सह आचार्य 1983, 1993 तक भोपाल विश्वविद्यालय में आचार्य, 1993 से 2016 तक दिल्ली विश्वविद्यालय में आचार्य पद पर कार्य किया। 2014 मार्च से 2019 मार्च तक अंतर राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय वर्धा में में कुलपति पद पर कार्य कर सेवानिवृत्त हुये।

कार्यक्रम का प्रारम्भ करते हुये अपने स्वागत वक्तव्य में अकादमी की उपाध्यक्षा डॉ0 कान्ता भाटिया ने कहा कि संस्कृत में वैश्विक मनोविज्ञान एक नई शाखा है। इस का प्रारम्भ भारत में 1800 वीं शताब्दी में हुआ। सबसे पहले कलकत्ता में इस के पठन–पाठन की व्यवस्था की गई।

यह कार्यक्रम अकादमी के सचिव डॉ० अरुण कुमार झा के मार्ग दर्शन में आयोजित किया गया। जिसका उद्देश्य था कि संस्कृत में निहित ज्ञान विज्ञान को अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाई जा सके। आगे भी इस क्षेत्र में कार्य करने वाले विद्वानों से इस बारे में व्याखान कराये जायेंगे।

इस अवसर पर कई गणमान्य व्यतियों ने वेविनार के माध्यम से इस कार्यक्रम में भाग लिया ।

प्रैस विज्ञप्ति

दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली सरकार
प्लाट नं.-5, झण्डेवालान, करोलबाग, नई दिल्ली 110005

दिनांक 23.10.2021

इस ब्रहमांड के ऊपर संस्कृति का सबसे पहला श्लोक महर्षि वाल्मीकी जी ने लिखा।

-श्री अरविंद केजरीवाल

(मुख्यमंत्री दिल्ली सरकार)

दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली सरकार द्वारा महर्षि वाल्मीकी के प्रकटोत्सव का आयोजन दिल्ली के त्यागराज स्टेडियम में किया गया। इस अवसर पर दिल्ली सरकार के उपमुख्यमंत्री मनीष सिसोदिया, कैबिनेट मंत्री राजेंद्र पाल गौतम, दिल्ली विधानसभा के डिप्टी स्पीकर राखी बिड़लान, मंदिर मार्ग स्थित वाल्मीकि मंदिर के महंत पीठसीन मंडलेश्वर कृष्ण शाह विद्यार्थी महाराज, कोंडली से 'आप' विधायक कुलदीप कुमार, कला संस्कृति एवं भाषा विभाग के प्रमुख सचिव विक्रम देव, वाल्मीकि योगाश्रम जालंधर पंजाब के महंत एवं राष्ट्रीय वाल्मीकि समाज धर्मगुरु महामंडलेश्वर बालयोगी बाबा प्रकटनाथ महाराज समेत अन्य गणमान्य लोगों ने दीप प्रज्ज्वलित किया और सभी ने भगवान वाल्मीकि के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री श्री अरविंद केजरीवाल ने कहा कि इस ब्रह्मांड के ऊपर संस्कृति का सबसे पहला श्लोक महर्षि वाल्मीकि ने लिखा। संस्कृति का पहला काव्य रामायण, जिसे महाकाव्य और आदिकाव्य कहा गया है, उसको महर्षि वाल्मीकि ने लिखा। भगवान राम के दोनों बच्चों को शिक्षा देना कोई हंसी-खेल नहीं था। भगवान राम के दोनों बच्चों लव-कुश को महर्षि वाल्मीकि ने शिक्षा दी। वो इतने महान ज्ञानी व्यक्ति थे आप सोचकर देखें कि अगर वो रामायण नहीं लिखते, तो क्या हमें भगवान रामचंद्रजी के बारे में पता चल सकता था। हमें भगवान राम के बारे में कौन बताता? महर्षि वाल्मीकि का सबसे बड़ा यह है कि उन्होंने पूरी दुनिया और पूरी इंसानियत को भगवान राम के बारे में बताया, उनकी पूरी कहानी बताई। ऐसे महान ऋषि भगवान वाल्मीकि के हम सब लोग अनुयायी हैं। वाल्मीकि समाज के दो सबसे बड़े आदर्श भगवान वाल्मीकि और बाबा साहब डॉ. अम्बडेकर हैं। दोनों ने ही सबसे ज्यादा महत्त्व शिक्षा को दिया है। महर्षि वाल्मीकि ने तीन संदेश नारी सम्मान, पढ़ाई और करुणा दिए हैं। उन तीनों संदेशों में उन्होंने पढ़ाई पर सबसे ज्यादा बात कही है।

इस दौरान मुख्यमंत्री श्री केजरीवाल ने दिल्ली सरकार के स्कूलों से 12वीं में 90 फीसद से अधिक नंबर हासिल करने वाले दलित समाज के 22 मेधावी छात्रों को प्रमाण पत्र और शील्ड देकर सम्मानित किया। मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने कहा कि वाल्मीकि समाज के दो सबसे बड़े आदर्श भगवान वाल्मीकि और बाबा साहब डॉ. अम्बडेकर हैं और दोनों ने शिक्षा को महत्त्व दिया है। दोनों ने एक ही बात कही है कि अगर हमें तरक्की करनी है, तो तरक्की का रास्ता केवल शिक्षा से निकलेगा।

श्री अरविन्द केजरीवाल ने यह भी कहा की बाबा साहब डॉ. अम्बेडकर बहुत ही गरीब परिवार में पैदा हुए थे। मैं जितनी बार भी उनकी जीवनी पढ़ता हूँ उनके उपर इतनी फिल्में बनी है। जितनी बार उनकी फिल्में देखता हूँ मैं समझता हूँ कि वे बहुत ही महान व्यक्ति थे। उन्होंने अपने जीवन में बहुत ही संघर्ष किया। मैं बार-बार

यह बात कहता हूँ और आज फिर दोहरा रहा हूँ कि आज हम 21वीं सदी में रह रहे हैं। आज 21वीं सदी के अंदर अगर आपको अमेरिका से डिग्री लेनी है, तो आसान नहीं है। अमेरिका से डाक्टरेट और पीएचडी करना आज के जमाने में आसान नहीं है। उन्होंने एक नहीं, दो-दो डिग्री विदेशों की हासिल की है। बाबा साहब ने एक डिग्री अमेरिका से ली और दूसरी इंग्लैंड से ली। जब वे इंग्लैंड से डिग्री ले रहे थे, तब उनके पैसे खत्म हो गए थे, तो उनको बीच में डिग्री छोड़कर वापस आना पड़ा। इसके बाद डिग्री पूरा करने के लिए वे दोबारा इंग्लैंड गए। ऐसे महान व्यक्तियों के अनुयायी होकर अगर हम लोग अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा न दें, अगर हम कम पढ़े लिखे रह जाएं, तो यह ठीक बात नहीं है।

इस अवसर पर कई गणमान्य व्यक्ति यू-ट्यूब, फेसबुक के माध्यम से जुड़े रहे। इस प्रकटोत्सव को अकादमी के यू-ट्यूब, फेसबुक चेनल के माध्यम से प्रसारित किया गया।

प्रैस विज्ञप्ति

दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली सरकार

प्लाट नं-5, झण्डेवालान, करोलबाग नई दिल्ली-5

दिनांक 26.06.2020

योग की उत्पत्ति हजारों वर्ष पहले हुई थी। -प्रो0 मधुसूदन पैन्ना

महर्षि पतंजलि ने वेद में बिखरी योग विद्या को पहली बार समग्र रूप में प्रस्तुत किया। -डॉ0 अरुण कुमार झा

2019 में साहित्य अकादमी से पुरस्कृति हुए है प्रो मधुसूदन पैन्ना -डॉ0 रणजीत वेहेरा

शरीर, मन और आत्मा का समत्व ही योग है- डॉ0 कान्ता भाटिया

योग की परम्परा अत्यन्त प्राचीन है और इसकी उत्पत्ति हजारों वर्ष पहले हुई थी। ऐसा माना जाता है कि जब से सभ्यता शुरू हुई है तभी से योग किया जा रहा है। अर्थात् प्राचीनतम धर्मों या आस्थाओं के जन्म लेने से काफी पहले योग का जन्म हो चुका था। योग विद्या में शिव को ''आदि योगी'' तथा ''आदि गुरू'' माना जाता है। उपनिषदों, महाभारत और भगवद्गीता में योग के बारे में बहुत चर्चा हुई है। भगवद्गीता में ज्ञान योग, भक्ति योग, कर्म योग और राज योग का उल्लेख है। गीतोपदेश में भगवान श्रीकृष्ण स्वयं अर्जुन को योग का महत्त्व बताते हुए कर्मयोग, भक्तियोग व ज्ञानयोग का वर्णन करते हैं। प्राचीनकाल में योग, श्वसन एवं मुद्रा सम्बधी अभ्यास न होकर एक जीवनशैली बन गया था। उपनिषद् में इसके पर्याप्त प्रमाण उपलब्ध हैं। कठोपनिषद में योग के बारे में लिखा गया है। जैन और बौद्ध जागरण और उत्थान काल के दौर में यम और नियम के अंगों पर जोर दिया गया है। यम और नियम अर्थात अहिंसा, सत्य, ब्रह्मचर्य, अस्तेय, अपरिग्रह, शौच, संतोष, तप और स्वाध्याय का प्रचलन ही अधिक रहा। यहाँ तक योग को सुव्यवस्थित रूप नहीं दिया गया था। 563 से 200 ई.पू. योग के तीन अंग-तप, स्वाध्याय और ईश्वर प्राणिधान-का प्रचलन था। इसे ''क्रियायोग'' कहा जाता है। प्रसिद्ध संवाद, योग याज्ञवल्क्य में, जोकि बृहदारण्यक उपनिषद में वर्णित है, में याज्ञवल्क्य और गार्गी के बीच कई साँस लेने सम्बन्धी व्यायाम, शरीर की सफाई के लिए आसन और ध्यान का उल्लेख है। गार्गी द्वारा छांदोग्य उपनिषद में भी योगासन के बारे में बात की गई है। शास्त्रीय काल (200 ईसा पूर्व से 500 ई) इस काल में योग एक स्पष्ट और समग्र रूप में सामने आया।

ये विचार दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली सरकार द्वारा आयोजित ''भारतीय यौगिक परमपराया: सातत्यम्'' पर आयोजित वेबिनार व्याख्यानमाला के मुख्य वक्ता कविगरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय के दर्शन संस्कृति विभाग के आचार्या साहित्य अकादमी से पुरस्कृत प्रो॰ मधुसूदन पैन्ना ने व्यक्त किये। प्रो॰ पैन्ना ने आगे कहा कि महर्षि पतंजलि ने वेद में बिखरी योग विद्या को 200 ई.पू. पहली बार समग्र रूप में प्रस्तुत किया। उन्होंने सार रूप योग के 195 सूत्रों को योगसूत्र में संकलित किए। पतंजलि सूत्र का योग, राजयोग है। इसके आठ अंग हैं, यम (सामाजिक आचरण), नियम (व्यक्तिगत आचरण), आसन (शारीरिक आसन),

प्राणायाम (श्वास विनियमन), प्रत्याहार (इंद्रियों की वापसी), धारणा (एकाग्रता), ध्यान (मेडिटेशन) और समाधि। यद्यपि पतंजलि योग में शारीरिक मुद्राओं एवं श्वसन को भी स्थान दिया गया है लेकिन ध्यान और समाधि को अधिक महत्त्व दिया गया है। योगसूत्र में किसी भी आसन या प्राणायाम का नाम नहीं है। इसी काल में योग से सम्बन्धित कई ग्रन्थ रचे गए, जिनमें पतंजलि का योगसूत्र, योगयाज्ञवल्क्य, योगाचारभूमिशास्त्र, और विशुद्धि प्रमुख हैं। इस काल में पतंजलि योग के अनुयायियों ने आसन, शरीर और मन की सफाई, क्रियाएँ और प्राणायाम करने को अधिक से अधिक महत्व देकर योग को एक नया दृष्टिकोण या नया मोड़ दिया। योग का यह रूप हठयोग कहलाता है। इस युग में योग की छोटी-छोटी पद्धतियाँ शुरू हुई। वर्तमान में योग के महत्व को स्वामी विवेकानन्द ने शिकागो के धर्म संसद में अपने ऐतिहासिक भाषण में योग का उल्लेख कर सारे विश्व को योग से परिचित कराया। महर्षि महेश योगी, परमहंस योगानन्द, रमण महर्षि जैसे कई योगियों ने पश्चिमी दुनिया को प्रभावित किया और धीरे-धीरे योग एक धर्मनिरपेक्ष, प्रक्रिया-आधारित धार्मिक सिद्धान्त के रूप में दुनिया भर में स्वीकार किया गया।

इस अवसर पर अकादमी के सचिव डॉ० अरुण कुमार झा ने कार्यक्रम में उपस्थित सभी अतिथियों का स्वागत किया और कहा कि अकादमी जब तक सरकार की ओर से कोर्स फिजिकली कार्यक्रम आयोजित करने की स्वीकृति नहीं मिलती है तब तक वेबिनार के माध्यम से वेब सिरीज व्याख्याख्यानमाला का आयोजन नियमित रूप से करती रहेगी।

इस अवसर पर दिल्ली विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के आचार्य डॉ० रणजीत बेहेरा जी ने विस्तार से प्रो० मधुसूदन पैन्ना जी का जीवन परिचय से लोगों को अवगत कराया। वर्ष 2019 में इन्हें साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

इस अवसर पर कई गणमान्य व्यतियों ने भाग लिया ।

प्रेस विज्ञप्ति

दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली सरकार
प्लाट नं.-5, झण्डेवालान, करोल बाग, नई दिल्ली-5

दिनांक 19.10.2021

महर्षि वाल्मीकि जयन्ती के उपलक्ष्य में संस्कृत प्रश्न मंच का आयोजन किया गया।

स्वतंत्रता के 75 वें वर्ष आजादी का अमृत महोत्सव पर दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार, द्वारा वेबिनार के माध्यम से महर्षि वाल्मीकि जयन्ती के अवसर पर महर्षि वाल्मीकि पर आधारित प्रश्नमंच प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय के छात्र-छात्राओं को आमंत्रित किया गया था। प्रतियोगिता में 17 प्रतिभागियों ने भाग लिया। प्रतियोगिता का शुभारम्भ वैदिकमंगला चरण से किया गया। प्रश्नमंच का संचालन दिल्ली विश्वविद्यालय के सेण्टस्टीफेन्स महाविद्यालय के संस्कृत विभाग के आचार्य डॉ० पंकज कुमार मिश्रा द्वारा किया गया। प्रतियोगिता प्रथम चरण एवं द्वितीय चरण में आयोजित की गई। प्रथम चरण में सर्वाधिक अंक लेने वाले 7 प्रतिभागियों के बीच द्वितीय चरण में पुन: प्रतियोगिता आयोजित की गई जिसके 3 चरण हुये। अन्त में इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पर दो प्रतिभागियों के आने से इन प्रतिभागियों में पुन: प्रतियोगिता की गई, जिसमें दिल्ली विश्वविद्यालय के विवेकानन्द महाविद्यालय की तेजस्वनी को प्रथम स्थान मिला, द्वितीय स्थान इन्द्रप्रस्थ महाविद्यालय की स्नेहा को प्राप्त हुआ तथा तृतीय स्थान हिन्दू महाविद्यालय के ऋषभ कुनाल को प्राप्त हुआ। विजेता प्रतिभागियों को उनके बैंक खाते में पुरस्कार राशि भेजी जायेगी। प्रथम पुरस्कार 3000/-, द्वितीय पुरस्कार 2000/- तथा तृतीय पुरस्कार 1000/- का है।

इस अवसर पर कार्यक्रम के प्रारम्भ में अकादमी की उपाध्यक्षा डॉ0 कान्ता भाटिया ने कहा कि महर्षि वाल्मीकि के जीवन से हमें बहुत शिक्षा मिलती है। किस प्रकार से उनके जीवन में परिवर्तन आया और उन्होंने रामायण ग्रन्थ की रचना में सम्पूर्ण भारतीय संस्कृति का समावेश कर दिया। संस्कृत भाषा के आदिकवि महर्षि वाल्मीकि ने रामायण की रचना कर के विश्व को एक आदर्श संस्कृति दी जो आज भी विश्व को प्रेरणा देती आ रही है। युवा वर्ग को संस्कृत से एवं रामायण या वाल्मीकी द्वारा रचित अन्य ग्रन्थ के बारे में जानकारी के लिये इससे बड़ा कोई माध्यम नहीं है।

इस अवसर पर अकादमी के सचिव डॉ० अरुण कुमार झा ने कहा कि भारतीय संस्कृति के सभी पक्ष महर्षि वाल्मीकि ने रामायण में लिखे है। रामायण में महर्षि वाल्मीकि ने आदर्श संस्कृति को निरूपित करते हुये परिवार में भाई का भाई से, पिता का पुत्र से माता का पुत्र से शत्रु का मित्र से किस प्रकार का व्यवहार होना चाहिये इसके साथ साथ राजा के कर्तव्य एवं मंत्रियों का कार्य आदर्श राज व्यवस्था आदि इन सभी शिक्षाओं निहित किया है। रामायण को पढ़ने से व्यक्ति सम्पूर्ण भारतीय संस्कृति से अभिभूत हो जाता है। अकादमी महर्षि वाल्मीकि के जीवन पर अभी और भी कार्यक्रमों का आयोजन करा रही है।

इस अवसर पर अनेक गणमान्य व्यक्ति भी वेबिनार के माध्यम से प्रश्नमंच का आनन्द लेकर रामायण के बारे में जानते रहे।

प्रकाशन

अकादमी द्वारा ज्ञान–विज्ञान के विभिन्न उपयोगी विषयों पर संस्कृत–पुस्तकें प्रकाशित की जाती हैं। अभी तक प्रकाशित की गयी पुस्तकों का विवरण निम्न प्रकार से है। अधिक जानकारी के लिए ई–मेल sanskritpatrika.dsa@gmail.com, sanskritprakashan.dsa@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है :–

अकादमी प्रकाशनों की सूची

क्र.सं.	प्रकाशनों का विवरण	मूल्य
1.	महाबुद्धवत्थु–भाग एक से छः तक	1860
2.	वैदिक खण्ड (संस्कृत सूक्तिसमुच्चय) प्रथम संस्करण	300
	वैदिक खण्ड (संस्कृत सूक्तिसमुच्चय) द्वितीय संस्करण	300
3.	ब्राह्मण खण्ड (संस्कृत सूक्तिसमुच्चय) प्रथम संस्करण	200
	ब्राह्मण खण्ड (संस्कृत सूक्तिसमुच्चय) द्वितीय संस्करण	200
4.	उपनिषद् खण्ड (संस्कृत सूक्ति समुच्चय)	180
5.	आरण्यक खण्ड (संस्कृत सूक्ति समुच्चय)	125
6.	सांख्ययोग खण्ड (संस्कृत सूक्ति समुच्चय)	550
7.	वेदान्त खण्ड (संस्कृत सूक्ति समुच्चय)	260
8.	मीमांशा खण्ड (संस्कृत सूक्ति समुच्चय)	225
9.	न्यायवैशेषिक खण्ड (संस्कृत सूक्ति समुच्चय)	500
10.	स्मृति खण्ड (संस्कृत सूक्ति समुच्चय)	350
11.	जैन दर्शन खण्ड (संस्कृत सूक्ति समुच्चय)	300
12.	बौद्ध एवं चार्वाक दर्शन खण्ड (संस्कृत सूक्ति समुच्चय)	300
13.	वेदाङ्ग खण्ड (संस्कृत सूक्ति समुच्चय)	120
14.	रामायण खण्ड (संस्कृत सूक्ति समुच्चय)	200
15.	महाभारत खण्ड (संस्कृत सूक्ति समुच्चय)	300
16.	पुराण खण्ड (संस्कृत सूक्ति समुच्चय)	300
17.	काव्य एवं महाकाव्यखण्ड (संस्कृतसमुच्चय)	250
18.	काव्यशास्त्र खण्ड (संस्कृतसमुच्चय)	200
19.	गद्य खण्ड (संस्कृत सूक्तिसमुच्चय)	200
20.	संस्कृत नाट्य खण्ड (संस्कृत सूक्तिसमुच्चय)	300
21	आधुनिक नाट्य खण्ड (संस्कृत सूक्तिसमुच्चय)	300
22.	आधुनिक काव्य खण्ड (संस्कृत सूक्तिसमुच्चय)	150
23.	मुक्तक खण्ड (संस्कृत सूक्तिसमुच्चय)	180
24	व्याकरण खण्ड (संस्कृत सूक्तिसमुच्चय)	

25	शिक्षासूक्तिमुक्तावली	100
26.	चाणक्यसूत्रम्	300
27.	संस्कृतवाङ्मये विज्ञानम्	175
28.	संस्कृतवाङ्मये शासन प्रबन्धन पद्धतिः	100
29.	संस्कृतवाङ्मये जलविज्ञानम्	400
30.	संस्कृत वाङ्मय में जल विज्ञान (हिन्दी अनुवाद)	300
31.	संस्कृतवाङ्मये कृषिविज्ञानम्	300
32.	विंशशताब्दी संस्कृतकाव्यामृतम् – प्रथमो भागः	750
33.	विंशशताब्दी संस्कृतकाव्यामृतम् – द्वितीयो भागः	800
34.	दिल्लीस्थाः विंशशताब्द्याः संस्कृतरचनाकाराः	200
35.	स्वातन्त्र्यस्वर्णसौरभम्	600
36.	श्रीरवीन्द्रकाव्यकुसुमांजलिः– भाग एक,	50
37.	श्रीरवीन्द्रकाव्यकुसुमांजलिः– भाग दो,	50
38.	श्रीरवीन्द्रकाव्यकुसुमांजलिः– भाग तीन,	50
39.	श्रीरवीन्द्रकाव्यकुसुमांजलिः– भाग चार,	50
40.	व्यावहारिक संस्कृतम्–पुस्तक	5
41.	व्यावहारिक संस्कृतम्–चार्ट	16
42.	व्यावहारिक संस्कृतम्–(कैसेट)	15
43.	हनुमत् सुप्रभातम् (कैसेट)	25
44.	वर्णात्मकम् भगवती सुप्रभातम् (कैसेट)	25
45.	मेघदूतम् कैसेट–तीन भाग	75
46.	सौन्दर्यलहरी (कैसेट)	100
47.	सौन्दर्यलहरी (सी.डी.)	150
48.	भक्तिरसामृतम् (कैसेट)	250
49.	भीमशतकम् (प्रथम संस्करण)	100
50.	भीमशतकम् (द्वितीय संस्करणम्)	100
51.	संघे शक्तिः कलौ युगे	100
52.	प्रियदर्शिनीयम्	140
53.	सुभाषचन्द्रकाव्यवल्लरी,	50
54.	स्वतन्त्रता (कविता संग्रहः)	75
55.	भावना (कविता संग्रहः)	70
56	संस्कृतिः (कविता संग्रहः)	50
57.	भारती (कविता संग्रहः)	50
58.	व्यवस्था (कविता संग्रहः)	50
59.	समस्या (कविता संग्रहः)	50
60.	प्रभा (कविता संग्रहः)	50

61.	साधना (कविता संग्रहः)	50
62.	शिक्षा (कविता संग्रहः)	60
63.	राष्ट्रम् (कविता संग्रहः)	60
64.	देववाणी (कविता संग्रहः)	60
65.	दिल्ली (कविता संग्रहः)	50
66.	संस्कृत लघुकथा संग्रहः	80
67.	संस्कृत नाटक संग्रहः	80
68.	कथामंजरी	60
69.	नाट्यमंजरी	50
70.	कथालतिका	50
71.	नाट्यलतिका	50
72.	संस्कृतकथाकौमुदी	50
73.	संस्कृतनाट्यकौमुदी	50
74.	कथावल्लरी	50
75.	नाट्यवल्लरी	60
76.	संस्कृतलघुकथाचयः	150
77.	संस्कृतलघुनाट्यचयः	175
78.	संस्कृतलघुकथामंजूषा	100
79.	संस्कृतलघुनाट्यमंजूषा	100
80.	शंकरग्रन्थावलिः प्रथमो भागः –(उपनिषद्भाष्यम्)	700
81.	शंकरग्रन्थावलिः द्वितीयो भागः – (ब्रह्मसूत्रभाष्यम्)	350
82.	शंकरग्रन्थावलिः तृतीयो भागः–(श्रीमद्भगवद्गीताभाष्यम्)	400
83.	भूतत्त्वविद्यायाः प्रभवोपचयौ	250
84.	वेदमंजरी	800
85.	व्याकरण मंजरी	500
86.	निरुक्तसम्मर्शः	1500
87.	संस्कृत संगीत संध्या (डी.वी.डी.)	100
88.	संस्कृत गीत संगीत (डी.वी.डी.)	100
89.	संस्कृत श्लोक संगीत (डी.वी.डी.)	100
90.	संस्कृत काव्याली (डी.वी.डी.)	100
91.	संस्कृत एकल श्लोक संगीत (डी.वी.डी.)	100
92.	ऋग्वेद संहिता	600
93.	यजुर्वेद संहिता	250
94.	सामवेद संहिता	250
95.	अथर्ववेद संहिता	400
96.	श्रीमद्भगवद्गीता–समर्पणभाष्य सहित	150
97.	कथानिर्झरी	100
98.	नाट्यनिर्झरी	150

99.	ईशदर्शनम्	350
100.	ईशावास्योपनिषद्—एक विवेचनात्मक अध्ययन	350
101.	पाणिनिपंचकम्	250
102.	वैदिक—विमर्शः	150
103.	संस्कृतवाग्व्यवहारः	250
104.	संस्कृत कथा मंजरी	400
105.	साहित्यमंजरी—प्रथमो भागः	50
106.	संस्कृतवाक्यप्रबोध	50
107.	वदतु संस्कृतम्	250
108.	संस्कृत सूक्ति सुरभिः	500
109.	सामवेद भाष्यम्	250
110.	दर्शनपरिशीलनम्	100
111.	नाट्यावली	300
112.	द्रव्यगुण मीमांसा में वेदांत और विज्ञान	100
113.	कथा मंदाकिनी	— —
114.	संस्कृत दैनन्दिनी 2002 से 2013 तक	— —
115.	वार्षिकी 1988—1989 से 2002—2003 तक तथा 2004—2005 से 2019—2020 तक	
116.	संस्कृत सम्मेलन रिपोर्ट—1993, 1997, 2000, 2002 2016—17	
117.	संस्कृतमंजरी ISSN—2778—8360 अप्रैल—जून 1991 से अक्टूबर—दिसम्बर 2020 तक कुल 104 अंक प्रकाशित अप्रैल—जून 2000 से पूर्व के अंक रू. 8/— तथा पश्चात् रु.15/— प्रति अंक तथा जुलाई 2012 से 2020 प्रति अंक रु. 25/—	100 (वार्षिक)
118.	संस्कृत—चन्द्रिका (मासिक बाल पत्रिका) ISSN—2347—1565	25 प्रति अंक 250 (वार्षिक)
119.	नागरिक घोषणापत्र 2003, 2005 से 2008 2010, 2013, 2015, 2017 से 2022	
120.	संस्कृत कैलेण्डर (छोटे एवं बड़े)—2005 से 2012 तक	
121.	टेबल कलेण्डर—2013	— —
122.	संस्कृत सूक्ति पट्ट	— —
123.	संस्कृत सूक्ति चार्ट	— —
124.	संस्कृत सूक्ति चार्ट	— —

अकादमी के पाण्डुलिपि प्रकाशन सहयोग के अन्तर्गत प्रकाशित पुस्तकों की सूची

क्र.सं.	पुस्तकों का विवरण	मूल्य
1.	विविधा	30
2.	उच्छ्वासानां प्रतिच्छाया	125
3.	पत्रकाव्यम्	300
4.	बालैकविंशतिः	12
5.	व्यामोहः	40
6.	श्रीविष्णुभगवतोनामशतकस्तोत्रम्	10
7.	सुभाषचरितम्	30
8.	सरलावासन्ती	50
9.	लक्ष्यवेधकः बुद्धिमान्	50
10.	वानरिका मुक्तमालिका च	50
11.	एकांकीनाट्यद्वयम्	20
12.	नीतिकथामकरन्दः	60
13.	परिवर्तनम्	40
14.	सामभाष्यम्	125
15.	शतकचतुष्टयम्	40
16.	वैदिकी यज्ञ विद्या	200
17.	गीति मंजरी	60
18.	महर्षिमाल्यार्पणम्	25
19.	शतकत्रयम्	60
20.	वेदनावल्लकी	50
21.	अनुभूतिः	80
22.	के ते आसन् डायनासोराः	50
23.	श्रीमद्भगवद्विलासः	60
24.	पुस्तकालयपरिचर्याप्रसूनम्	200
25.	प्रेरणा पारिजातम्	80
26.	शुष्को वृक्षः	60
27.	दशमेशचरितम्	125
28.	सौन्दर्यलीलामृतम्	150
29.	अरण्यानी	100
30.	संस्कृतशतकम्	50
31.	शिशो उत्पत्तिः	20
32.	अस्माकं दन्ताः	20
33.	प्रशस्तिपंचचामरम्	100
34.	अवेक्षणानि	40
35.	तपस्वीकृषिवलम्	30
36.	राष्ट्रं भवति सर्वस्वम्	35

37.	कथाकल्पः	151
38.	कालिदासीयम्	175
39.	राष्ट्रदेवता	150
40.	टाईटैनिक जलयानम्	20
41.	दक्षिणी ध्रुवप्रदेशः	20
42.	रोमांचकी	40
43.	स्वतन्त्रभारती	130
44.	काव्यमन्दाकिनी	150
45.	सप्तकथाचक्रम्	60
46.	नाट्यकल्पः	300
47.	अभिनवचिन्तनम्	200
48.	चन्द्रतले मानवस्य प्रथमं पदार्पणम्	40
49.	पुराणविमर्शः	95
50.	सूक्तिस्तबकवल्लरी	140
51.	प्रणवचतुष्टयी	200
52.	काव्यमाला	150
53.	पापिष्ठा	125
54.	हरियाणाप्रदेशस्य पंच साहित्यकाराः	125
55.	काव्यकौरवम्	150
56.	शृंगेरीशतकम्	80
57.	संस्कृतसाहित्ये परिष्ठितिकी विद्या	200
58.	मृच्छकटिकपरिशीलनम्	200
59.	संस्कृतकविस्तवः	100
60.	अभिधानरत्नमाला	150
61.	ईसपकथा निकुञ्जः	275
62.	वेदार्थनिर्णये निरुक्तस्य महत्त्वम्	255
63.	शिवमहिम्नः रहस्यम्	100
64.	सूर्यशतकम्	120
65.	नव्यन्यायवादग्रन्थाः	150
66.	पर्यावरणकाव्यम्	150
67.	काव्यविलासः	275
68.	काव्यामृततरंगिणी	150
69.	वरंकन्या	100
70.	ऋग्वेद के दार्शनिक सूक्त	300
71.	षड्यन्त्र विस्फोटनम्	50
72.	नाट्यामृतम्	150
73.	श्रीदुर्गातत्त्वविमर्शः	200
74.	यज्ञ गौरवम्	80
75.	संस्कृत निबन्ध सुधा	120

76.	तेनालीकथा कौस्तुभम्	250
77.	अवगाहनम्	80
78.	काव्यकल्लोलिनी	250
79.	अलंकारकौस्तुभम्	80
80.	सावित्री	30
81.	श्रीवात्स्यनारायणम्	40
82.	झषमहिषी	30
83.	बालनैतिककथा	60
84.	अमरक्रान्तिकारी पं. रामप्रसाद बिस्मिलः	30
85.	एकांकपंचदशी	300
86.	कपिशा	100
87.	संस्कृतबोधाकथामंजरी	50
88.	वैदिक कवि चर्चा	100
89.	काव्यत्रिवेणी	45
90.	हृदयप्रसूनम्	120
91.	सर्वशुक्ला	250
92.	रसवसुमूर्तिः	300
93.	नाट्यत्रयी	75
94.	सुमनोवाटिका	300
95.	प्रतीच्यदिङ्मण्डलम्	150
96.	संस्कृतनिबन्धचन्द्रिका	40
97.	बालसमुल्लासः	100
98.	वाग्वल्लरी	30
99.	कुमारविजयम्	190
100.	वन्दे नदीमातरम्	100
101.	कनीयसी	30
102.	एकांकाष्टकम्	45
103	वैद्यजीवनम्	80
104	थानाध्यक्षः	70
105.	श्रीवैंकटेशवरशतकम्	50
106.	एकोऽपरः एकलव्यः	150
107.	आह्वहनम्	100
108.	समस्यापूर्तिशतकम्	80
109.	आधुनिकभारतम्	80
110.	काश्मीरक्रन्दनम्	250
111.	कथाकलिका	250

112.	चन्द्रगुप्तचरितमहाकाव्यम्	200
113.	राष्ट्रचिन्तनम्	100
114.	स्वामीश्रद्धानन्दचरितमहाकाव्यम्	100
115.	महापुरुषस्मरणं सम्मान च	100
116.	स्वामीश्रद्धानन्दचरितम्	100
117.	चिन्तनालोकः	250
118.	आकाशतारा	100
119.	श्रीपरशुरामचरितम्	450
120.	उन्मीषितम्	180
121.	संघे शान्तिः सर्वदा	100
122.	कृष्णोपायनम्	150
123.	हितोपदेशकथा	200
124.	विश्वेतिहास्य तिथिक्रमः	500
125.	श्रावणस्य प्रथमदिवसे	300
126.	आशीर्वादः	300
127.	नाट्यमृतम्	90
128.	संस्कृत सहित्यमंजूषा	275
129.	कथामृतम्	105

पुस्तकालय

अकादमी द्वारा कार्यालय परिसर में पुस्तकालय की व्यवस्था की गई है, जिसमें संस्कृत साहित्य की विभिन्न पुस्तकों के अतिरिक्त अकादमी द्वारा एवं अकादमी के सहयोग से प्रकाशित पुस्तकें पठन हेतु उपलब्ध हैं।

संस्कृत–पत्रिका–प्रकाशन एवं प्रेषण योजना

इस योजना के अन्तर्गत दिल्ली संस्कृत अकादमी द्वारा नियमित रूप से प्रकाशित की जाने वाली पत्रिकाएँ संस्कृत मञ्जरी (शोध पत्रिका–ISSN–278–8360) एवं संस्कृत चन्द्रिका (मासिक बाल पत्रिका–ISSN–2347–1565) का प्रकाशन कर सशुल्क एवं निशुल्क प्रेषित की जाती हैं साथ ही दिल्ली स्थित संस्कृत विद्यालयों, विद्यापीठों और गुरुकुलों को तथा संस्कृत भाषा की नियमित प्रकाशित होने वाली प्रसिद्ध पत्र–पत्रिकाएँ निशुल्क प्रेषित की जाती हैं। अकादमी की दोनों पत्रिकाएँ ई–पत्रिका के रूप में अकादमी की वेब साईट पर भी उपलब्ध है।

पूर्णकालीन संस्कृत शिक्षण योजना

अकादमी द्वारा दिल्ली के सरकारी एवं सरकारी सहायता प्राप्त विद्यालयों में पूर्णकालीन संस्कृत शिक्षक नियुक्त किये गये हैं। ये सभी अध्यापक टी.जी.टी. स्तर के होते हैं। इन सभी अध्यापकों को अकादमी द्वारा वेतन दिया जाता है।

पारदर्शिता एवं लोक–शिकायतों का निवारण
(सूचना के अधिकार के अन्तर्गत सम्पर्क सूत्र)

दिल्ली संस्कृत अकादमी के सभी कार्यक्रमों से सम्बन्धित आवश्यक सूचनाएँ एवं मार्गदर्शन समय–समय पर प्रसारित किये जाते हैं, साथ ही अकादमी की गतिविधियों में आम लोगों की और विषय–विशेषज्ञों की भागीदारी, वित्तीय जवाबदेही, लोकशिकायतों के निवारण और पारदर्शिता लाने की दिशा में अकादमी द्वारा विभिन्न माध्यमों से उल्लेखनीय प्रयास किये गये हैं। अकादमी की गतिविधियों से सम्बन्धित कोई भी आवेदनकर्ता या जिज्ञासु अपनी कठिनाई व शिकायत बताने के लिए निम्नलिखित अधिकारी से सम्पर्क कर सकते हैं :–

जन सूचना अधिकारी का नाम	पद	दूरभाष
प्रथम अपीलीय अधिकारी डॉ. अरूण कुमार झा	सचिव, दिल्ली संस्कृत अकादमी	20920350 का.
जन सूचना अधिकारी श्री दामोदर सिंह	कार्यालय अधीक्षक	23635592 का.

अकादमी के विक्रय हेतु उपलब्ध प्रकाशनों की सूची

क्र.सं.	प्रकाशनों का विवरण	मूल्य	40% छूट के पश्चात् मूल्य
1.	वैदिक खण्ड सूक्ति समुच्च्य (द्वितीय संस्करण)	300	180
2.	ब्राह्मणखण्ड (संस्कृत सूक्ति समुच्चय) (द्वितीय संस्करण)	500	300
3.	वेदाङ्ग खण्ड (सूक्ति समुच्चय)	120	72
4.	काव्य एवं महाकाव्यखण्ड (समुच्चय)	250	150
5.	गद्य खण्ड (सूक्तिसमुच्चय)	200	120
6.	संस्कृत नाट्य खण्ड (सूक्तिसमुच्चय)	300	180
7.	आधुनिक काव्य खण्ड (सूक्तिसमुच्चय)	150	90
8.	मुक्तक खण्ड (सूक्तिसमुच्चय)	300	180
9.	विंशशताब्दी संस्कृतकाव्यामृतम् – प्रथमो भागः	750	450
10.	विंशशताब्दी संस्कृतकाव्यामृतम् – द्वितीयो भागः	800	480
11.	दिल्लीस्थाः विंशशताब्द्याः संस्कृतरचनाकाराः	200	120
12.	स्वातन्त्र्यस्वर्णसौरभम्	600	360
13.	व्यवस्था (कविता संग्रहः)	50	30
14.	शंकरग्रन्थावलिः प्रथमो भागः उपनिषद्भाष्यम्	700	420
15.	शंकरग्रन्थावलिः द्वितीयो भागः ब्रह्मसूत्रभाष्यम्	350	210
16.	शंकरग्रन्थावलिः तृतीयो भागः–श्रीमद्भगवद्गीताभाष्यम	400	240
17.	वेदमंजरी	800	480
18.	व्याकरण मंजरी	500	300

19. निरुक्तसम्मर्शः	500	300
20. संस्कृत संगीत संध्या (डी.वी.डी.)	1500	900
21. संस्कृत गीत संगीत (डी.वी.डी.)	100	60
22. संस्कृत श्लोक संगीत (डी.वी.डी.)	100	60
23. संस्कृत काव्याली (डी.वी.डी.)	100	60
24. संस्कृत एकल श्लोक संगीत (डी.वी.डी.)	100	60
25. ऋग्वेद संहिता	100	60
26. सामवेद संहिता	250	150
27. अथर्ववेद संहिता	250	150
28. कथानिर्झरी	400	240
29. कथावल्लरी	50	30
30. ईशदर्शनम्	100	60
31. ईशावास्योपनिषद्–एक विवेचनात्मक अध्ययन	350	210
32. वैदिक–विमर्श	350	210
33. संस्कृत कथा मंजरी	150	90
34. साहित्यमंजरी–प्रथमो भागः	250	150
35. सामवेद भाष्यम्	400	240
36. दर्शनपरिशीलनम्	500	300
37. दिल्ली–श्लोकसमस्यापूर्ति संग्रहः	250	150
38. नाट्यवली	50	30
39. द्रव्यगुण मीमांसा में वेदांत और विज्ञान	100	60
40. कथा मंदाकिनी	300	180
41. संस्कृत साहित्य परिशीलनम्	100	60
	250	150
42. संस्कृत चन्द्रिका (मासिक बाल पत्रिका) ISSN-2347-1565	25	250 (वार्षिक)
43. संस्कृत मंजरी (त्रैमासिक शोध पत्रिका)	25	100 (वार्षिक)
ISSN-2278-8360 अप्रैल–जून 1991 से दिसम्बर– 2020 तक कुल 104 अंक प्रकाशित (अप्रैल–जून 2000 से पूर्व के अंक रु.8/– तथा पश्चात् रु.15/– प्रति अंक तथा जुलाई 2012 से अब तक के अंक प्रति	25	100 (वार्षिक)

प्रकाशन हेतु उपलब्ध अकादमी के पाण्डुलिपि प्रकाशन सहयोग के अन्तर्गत प्रकाशित पुस्तकों की सूची

(विक्रय हेतु उपलब्ध)

क्र.सं.	पुस्तकों का विवरण	मूल्य	50% छूट के पश्चात् मूल्य
1.	श्रृंगेरीशतकम्	80	40
2.	मृच्छकटिकपरिशीलनम्	200	100

3. ईसपकथा निञ्कुजः	275	138
4. वेदार्थनिर्णये निरुक्तस्य महत्त्वम्	255	123
5. नव्यन्यायवादग्रन्थाः	150	75
6. नाट्यामृतम्	150	75
7. यज्ञ गौरवम्	80	40
8. अवगाहनम्	80	40
9. कपिशा	100	50
10. वैदिक कवि चर्चा	100	50
11. काव्यत्रिवेणी	45	23
12. सर्वशुक्ला	250	125
13. काव्यमाला	150	75
14. श्रीवेंकटेश्वरशतकम्	50	25
15. समास्यापूर्तिशतकम्	80	40
16. महापुरुषस्मरणं सम्मानं च	100	50
17. उन्मिशितम्	180	90
18. संघे भाक्तिः सर्वदा	100	50
19. ऋग्वेद के दार्शनिकसूक्त	300	150
20. षड्यन्त्र विस्फोटनम्	50	25
21. काव्यकैरवम्	150	75
22. वन्दे नदिमातरम्	100	50
23. वरं कन्या	100	50
24. पर्यावरण काव्यम्	150	75
25. समास्यापूर्तिशतकम्	80	40
26. आकाशतारा	100	50
27. चिन्तनालोकः	250	125
28. हितोपदेशकथा नाटकम्	200	100
29. विश्वेतिहासस्य तिथिक्रमः	500	250
30. श्रावणस्य प्रथमदिवसे	300	150
31. आशीर्वाद	300	150
32. अभिनवस्तव मुक्तावली	275	135
33. आशा	100	50
34. नाट्यामृतम्	90	45
35. संस्कृत सहित्य मञ्जूषा	275	138
36. कथामृतम्	105	53

(34)

R. RAI & CO.
CHARTERED ACCOUNTANTS

DELHI SANSKRIT ACADEMY
GOVT. OF NCT OF DELHI
PLOT NO.5, JHANDEWALAN, KAROL BAGH, NEW DELHI-110005

FORM G.F.R.-19-A

UTILISATION CERTIFICATE UNDER ESTABLISHMENT EXPENSES (MH2205) GENERAL HEAD FOR THE YEAR 2021-2022

S.No	LETTER NO. & DATE	AMOUNT
1.	UNSPENT BALANCE AS ON 01.04.2021	51,21,159.63
2.	No.F.11/08/2021/ACL/275-281 DATED 05.07.2021	68,75,000
3.	No.F.11/08/2021/ACL/1023-1029 DATED 11.11.2021	86,29,000
	TOTAL	2,06,25,159.63

Certified that out of total grant of Rs.2,06,25,159.63/-(i.e. opening unspent balance of Rs.51,21,159.63/- and Rs.1,55,04,000/- sanctioned during the year 2021-2022) under Establishment Expenses MH 2205 (General Head) in favor of **Delhi Sanskrit Academy** under the Language Department, Govt. of NCT of Delhi as per detail given in the margin and income from the other sources amounting to Rs.6,35,519/-. A sum of Rs.66,84,464.31/- under Establishment Expenses (MH 2205) General Head has been utilized during the year 2021-2022 for the purposed which it was sanctioned and balance of Rs.1,46,08,959.32/- from General Head recoverable from the DELHI SANSKRIT ACADEMY Delhi and being carried over in the next Financial Year 2022-2023.

Certified that I have certified myself that the condition on which the grant-in-aid sanctioned has been fulfilled and I have exercised the following checks to see that the money actually utilized for the purpose for which it was sanctioned.

<u>kind of checks exercised</u>

1) Checking of Vouchers
2) Books of Accounts for the period from 01-04-2021 to 31-03-2022.
3) Checking of Cash book/Bank book/Ledger.

As per our Audit Report of even date attached

For R. RAI & CO. — Counter Signed

Chartered Accountants
Firm Reg. No. 034059N

CA Ravi Kr. Rai
Proprietor
M.No. 551968
Place : New Delhi
Date : 04/07/2022

(SAURABH KR MISHRA)
DY. SECRETARY (ADMIN)

(DR. ARUN KUMAR JHA)
SECRETARY

(DAMODAR SINGH)
OS/CASHIER

(ROHIT KUMAR SETHI)
DY. SECRETARY (A/Cs)

UDIN- 22551968AHEGGX8192

R/o - R2/116, Mohan Garden, Uttam Nagar, New Delhi-110059
B/o - Shop No. - 8, Sector - 4, Mkt. R.K. Puram, New Delhi-110022
E-mail : rai.co039@gmail.com • Mob. : 9560634013, 8368333184

दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार, दिल्ली
वर्ष 2021–2022 का सामान्य मद (अनुदान) का खाता

मद	डेबिट	क्रेडिट
विविध उपलब्धियां	4904922.13	
पूंजी खाता		8833270.24
प्रतिभूति		20880
अग्रिम धन	2500	
अनुदान		15504000
डाक व्यय	866	
विविध व्यय	49693	
चाय व्यय	5102	
दूरभाष	56273.31	
पेट्रोल	4517	
लेखा परीक्षा शुल्क	21000	
विद्युत बिल	294500	
कार्यालय सामग्री / स्टेशनरी	528703	
कार्यालय भवन रखरखाव	126511	
समाचार पत्र	12285	
डाक टिकट शेष	4631	
हस्तांतरण प्रतिभूति राशि		2450
व्यावसायिक पुरस्कार	702160	
अग्रिम खाता	0	
बैंक ब्याज प्राप्ति		547415
पेंशन निवेशीकरण फंड		1916221.52
पेंशन निवेशीकरण	103500	
वाहन रख-रखाव	7349	
Deduct Refund		47058
पेपर बिक्री		25200
बैंक चार्ज	826	
संस्कृत छात्र सम्मेलन (छात्रावास शिविर)	100205	
[illegible] भारत संस्कृत महोत्सव	321503	
महर्षि वाल्मीकि पुरस्कार	4749435	
ऑनलाइन [illegible] प्रतियोगिता (महर्षि वाल्मीकि जयन्ती के उपलक्ष्य में)	9000	
अखिल भारत संस्कृत छात्र सम्मेलन (ग्रीष्मकालीन शिविर)	89300	
[illegible] प्रतियोगिता (महा.वि./वि.स्तर)	33800	
[illegible] प्रतियोगिता (महा वि./वि स्तर)	51500	
अखिल भारत संस्कृत [illegible] प्रकाशन सहयोग योजना	54000	
विविध आय		6300
अकादमी प्रकाशन से प्राप्त आय		32611
पुस्तकालय		2135
पुस्तकालय की पुस्तकों की सदस्यता लेने हेतु	4500	
कैश	0	
बैंक शेष	14608959.32	
योग	26937540.76	26937540.76

As per our Audit Report of even date attached
For R. RAI & CO.
Chartered Accountants
Firm Reg. No. 034059N

CA. Ravi K. Rai
Proprietor
M.No. 551958
Place : New Delhi
Date : 04/07/2022

(SAURABH KUMAR MISHRA)
DY. SECRETARY (Admin)

(DR. ARUN KUMAR JHA)
SECRETARY

(DAMODAR SINGH)
OS/CASHIER

(ROHIT KUMAR SETHI)
DY. SECRETARY (A/Cs)

32

दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार, दिल्ली
सामान्य मद (कार्यक्रम) के अन्तर्गत वर्ष 2021-2022 का प्राप्ति एवं भुगतान खाता

प्राप्ति	राशि	राशि	भुगतान	राशि	राशि
	2021-22	2020-21		2021-22	2020-21
प्रारम्भिक शेष			विविध सामग्री	60096	109405
नगद 112			कार्यालय व्यय	1107625.31	807394.7
बैंक 5121047.63	5121159.63	4779432.17	अग्रिम धन	0	8045
अनुदान	15504000	0	संस्कृत सम्मेलन	189505	268389
अकादमी प्रकाशन से आय	32611	18085	व्याख्यान माला संस्कृत गोष्ठी	321503	0
विविध आय	6300	34	महर्षि वाल्मीकि प्रकटोत्सव	4749435	0
हस्तांतरण प्रतिभूति प्राप्ति	2000	0	छात्रवृत्ति	0	1500
बैंक ब्याज प्राप्ति	547415	27959	प्रतिभा पुरस्कार	0	4000
संस्कृत सप्ताह	0	97171	संस्कृत प्रतियोगिता	94300	515739.36
प्रतिभूति	0	1750	संस्कृत प्रकाशन	54000	920
चैक निरस्तीकरण देय	0	1916221.52	पुस्तकालय	4500	0
Deduct Refund	47058	0	चैक निरस्तीकरण	103500	0
NEFT Return	25200	0	हस्तांतरण प्रतिभूति प्राप्ति	0	4100
पुस्तकालय	2135	0			
अग्रिम धन	5545	0			
			योग	6684464.31	1719493.06
			घटाया		
			चैक निरस्तीकरण	0	0
			योग खर्च	6684464.31	1719493.06
			अंतिम शेष		
			नगद 0		
			बैंक 14608959.32	14608959.32	5121159.63
योग	21293423.63	6840652.69	योग	21293423.63	6840652.69

As per our Audit Report of even date attached
For R. RAI & CO.
Chartered Accountants
Firm Reg. No. 034059N

CA. Ravi Kr. Rai
Proprietor
M.No. 553968
Place: New Delhi
Date: 8/07/2022

(SAURABH KUMAR MISHRA)
DY. SECRETARY (Admin)

(DR. ARUN KUMAR JHA)
SECRETARY

(DAMODAR SINGH)
OS/CASHIER

(ROHIT KUMAR SETHI)
DY. SECRETARY (A/Cs)

31

दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार, दिल्ली
सामान्य मद (कार्यक्रम) के अन्तर्गत वर्ष 2021–2022 का आय एवं व्यय खाता

	राशि	राशि		राशि	राशि
व्यय	2021–22	2020–21	आय	2021–22	2020–21
प्रारम्भिक डाक टिकट 4631			अनुदान	15504000	0
कार्यालय व्यय 1107625.31			अकादमी प्रकाशन से आय	32611	18085
1112256.31			विविध आय	6300	34
डाक टिकट शेष 2754	1109502.31	831879.7	पुस्तकालय	2135	0
पत्रिका	189505	268389	बैंक ब्याज प्राप्ति	547415	27959
महर्षि वाल्मीकि प्रकटोत्सव	4749435	0	संस्कृत उत्सव	0	97171
छात्रवृत्ति	0	1500	बैंक निवेशीकरण	0	1916221.52
प्रतिभा पुरस्कार	0	4000	Deduct Refund	47058	0
प्रतियोगिताएँ	94300	515739.36			
संस्कृत प्रचारण	54000	920			
पुस्तकालय	4500	0			
[illegible] संस्कृत फाउन्डेशन	321503	0			
योग	6522745.31	1622428.06	योग	16139519	2059470.52
घटाव					
बैंक निवेशीकरण	0	0			
कुल खर्च	6522745.31	1622428.06			
व्यय से आय की अधिकता	9616773.69	437042.46	आय से व्यय की अधिकता		
योग	16139519	2059470.52	योग	16139519	2059470.52

As per our Audit Report of even date attached
For R. RAI & CO.
Chartered Accountants
Firm Reg. No. 034059N

CA. Ravi Kr. Rai
Proprietor
M.No. 551968
Place: New Delhi
Date: 04/07/2022

(SAURABH KUMAR MISHRA)
DY. SECRETARY (Admin)

(DR. ARUN KUMAR JHA)
SECRETARY

(DAMODAR SINGH)
OS/CASHIER

(ROHIT KUMAR SETHI)
DY. SECRETARY (A/Cs)

दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार, दिल्ली
सामान्य मद (कार्यक्रम) के अन्तर्गत वर्ष 2021–2022 का आर्थिक चिट्ठा

दायित्व	राशि 2021–22	राशि 2020–21	सम्पत्तियाँ	राशि 2021–22	राशि 2020–21
पूंजी संचय	10749491.76	10312449.3	सम्पत्तियाँ	4934826.13	4825421.13
घटाव– बैंक निरस्तीकरण देय	1916221.52	0	जमा वित्त वर्ष मे खरीद	60096	109405
जमा व्यय से आय की अधिकता	9616773.69	437042.46	कुल सम्पत्तियाँ	4994922.13	4934826.13
घटाव आय से व्यय की अधिकता	0	0	न्यायालय सुरक्षा धन	702160	702160
कुल पूंजी संचय	18450043.93	10749491.76	अग्रिम धन	2500	8045
प्रतिभूति	20880	20880			
हस्तांतरण प्रतिभूति प्राप्ति	2450	450	अंतिम शेष		
बैंक निरस्तीकरण देय			नगद 0		
प्रारंभिक 1916221.52			बैंक 14608959.32		
जमा– NDT Return 25200		0	डाक टिकट 2754	14611713.32	5125790.63
घटाव– व्यय 103500	1837921.52				
योग	20311295.45	10770821.76	योग	20311295.45	10770821.76

As per our Audit Report of even date attached
For R. RAI & CO.
Chartered Accountants
Firm Reg. No. 034055N

F.No. 034055N
CA Rahul Kr. Rai
Proprietor
M.No. 551968
Place : New Delhi
Date :

(SAURABH KUMAR MISHRA)
DY. SECRETARY (Admin)

(DR. ARUN KUMAR JHA)
SECRETARY

(DAMODAR SINGH)
OS/CASHIER

(ROHIT KUMAR SETHI)
DY. SECRETARY (A/Cs)

कार्यालय व्यय		
क्रम सं.	कार्यालय व्यय	राशि
1	विविध व्यय	49693
2	मार्ग व्यय	5102
3	दूरभाष	56273.31
4	पैट्रोल	4517
5	वाहन रख रखाव	7349
6	लेखा परीक्षा शुल्क	21000
7	विद्युत बिल	294500
8	कार्यालय सामग्री/स्टेशनरी	528703
9	कार्यालय रख रखाव	126511
10	समाचार पत्र	12285
11	बैंक चार्ज	826
12	डाक व्यय	866
	योग	**1107625.31**

सम्मेलन		
क्रम सं.	सम्मेलन	राशि
1	संस्कृत कवि सम्मेलन (स्वतंत्रता दिवस)	100205
2	अखिल भारतीय संस्कृत कवि सम्मेलन (गणतंत्र दिवस)	89300
	योग	**189505**

प्रतियोगिताएँ		
क्रम सं.	प्रतियोगिताएँ	राशि
1	ऑनलाईन प्रश्नोत्तरी प्रतियोगिता (महर्षि वाल्मीकि जयन्ती के उपलक्ष्य में)	9000
2	प्रश्नमंच प्रतियोगिता (महा.वि/वि.स्तर)	33800
3	एकल श्लोक गायन प्रतियोगिता (महा वि./वि स्तर)	51500
	योग	**94300**

व्याख्यान माला		
क्रम सं.	छात्रवृत्ति	राशि
1	व्याख्यानमाला संस्कृत नवोन्मेष	321503
	योग	**321503**

पुस्तकालय		
क्रम सं.	संस्कृत प्रतिभा पुरस्कार	राशि
1	पुस्तकालय की पुस्तकों की सदस्यता लेने हेतु	4500
	योग	4500

प्रकाशन		
क्रम सं.	प्रकाशन	राशि
1	अखिल भा० संस्कृत पाण्डुलिपि प्रकाशन सहयोग योजना	54000
	योग	54000

As per our Audit Report of even date attached
For R. RAI & CO.
Chartered Accountants
Firm Reg. No. 034059N

(CA. Ravi Rai)
Proprietor
M.No. 551968
Place: New Delhi
Date : 04/07/2022

(SAURABH KUMAR MISHRA)
DY. SECRETARY (Admin)

(DR. ARUN KUMAR JHA)
SECRETARY

(DAMODAR SINGH)
OS/CASHIER

(ROHIT KUMAR SETHI)
DY. SECRETARY (A/Cs)

Pratibhuti Account

S.No.	Name of Enterprise	Year (2008-09)		Year (2009-10)		Year (2016-17)		Year (2020-21)		Year (2021-22)	
		Dr.	Cr.	Dr.	Cr.	Dr.	Cr.	Dr.	Cr.	Dr.	Cr.
		Payment	Receipt	Payment	Receipt	Payment	Receipt	Payment	Receipt	Payment	Receipt
1	Galaxy Info		600		3530						
2	Maxcom India Private Ltd.						15000				
3	Star Communication								1750		
	Total	0	600	0	3530	0	15000	0	1750	0	0
	Grand Total		600		4130		19130		20880		20880

As per our Audit Report of
even date attached
For R. RAI & CO.
Chartered Accountants
Firm Reg. No. 034059N

CA. Ravi Kr. Rai
Proprietor
M.No. 551968
Place : New Delhi
Date : 04/07/2022

(SAURABH KUMAR MISHRA)
DY. SECRETARY (Admin)

(DAMODAR SINGH)
OS/CASHIER

(DR. ARUN KUMAR JHA)
SECRETARY

(ROHIT KUMAR SETHI)
DY. SECRETARY (A/Cs)

(26)

दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली सरकार
प्लाट सं. 5, झण्डेवालान, करोल बाग, नई दिल्ली–05

सम्पत्तियाँ

वर्ष	प्रारम्भिक शेष	क्रय की गई सम्पत्तियाँ	व्ययीकरण किया गया	अन्तिम शेष
वर्ष 1988–89				
प्रारम्भिक शेष				
टेबल (स्टील)		4032		
अलमारी (स्टील)		9415		
बुक केस (स्टील)		4505		
अलमारी (स्टील) आठ खाने वाली		3200		
टाइप मशीन		8877		
दीपदान		492		
डुप्लीकेटिंग मशीन		9323		
स्टेंसिल कटर मशीन		28050		
ई सी कलर टी.वी.		13368		
फ्रिज गोदरेज		11602.36		
वी.सी.आर.		17090		
योग	0	109954.36	0	109954.36
वर्ष 1989–90				
प्रारम्भिक शेष	109954.36			
टेबल (स्टील)		6756		
टेबल (लकड़ी)		1484		
रैक (स्टील)		2722		
अलमारी (स्टील)		8998		
बुक केस		4114		
कैलकुलेटर		3553		
योग		27627	0	137581.36
वर्ष 1990–91				
प्रारम्भिक शेष	137581.36			
अलमारी		13840		
स्टैन्ड (फोटोकापी मशीन का		6500		
टाइप मशीन		4386		
योग		24726		162307.36

वर्ष	प्रारम्भिक शेष	क्रय की गई सम्पत्तियाँ	व्ययीकरण किया गया	अन्तिम शेष
वर्ष 1991–92				
प्रारम्भिक शेष	162307.36			
योग		0		162307.36
वर्ष 1992–93				
प्रारम्भिक शेष	162307.36			
टेबल (स्टील)		18108		
रैक (स्टील)		10363		
कुर्सी		22272		
स्टील		15552		
रिकार्डर		6010		
टेबल (स्टील)		1630		
योग		73935	0	236242.36
वर्ष 1993–94				
प्रारम्भिक शेष	236242.36			
टेबल (स्टील)		4964		
स्टूल (लकड़ी)		948		
रैक (स्टील)		732		
कुर्सी (डनलप–लकड़ी)		8800		
अलमारी (स्टील)		3728		
सोफा सैट		5294		
दीपदान		2675		
योग		27141	0	263383.36
वर्ष 1994–95				
प्रारम्भिक शेष	263383.36			
टेबल (स्टील)		25551		
स्टूल (लकड़ी)		1264		
रैक (स्टील)		16032		
कुर्सी (घूमने वाली)		776		
कुर्सी (डनलप–लकड़ी)		31680		
अलमारी (स्टील)		24858		
बुक केस (स्टील)		13758		
सोफा सैट		5294		
टेबल साईड रैक सहित		6050		
टेबल लकड़ी		5226		
योग		130489	0	393872.36
वर्ष 1995–96				
प्रारम्भिक शेष	393872.36			
विद्युत टंकण गोदरेज–1		36348		

वर्ष	प्रारम्भिक शेष	क्रय की गई सम्पत्तियाँ	व्ययीकरण किया गया	अन्तिम शेष
टेपिरिकोडर		1534		
योग		37882	0	431754.36
वर्ष 1996—97				
प्रारम्भिक शेष.	431754.36			
टेबल (स्टील)		6656		
स्टूल (लकड़ी)		2760		
कुर्सी (घूमने वाली)		3504		
अलमारी (स्टील)		24908		
बुक केस (स्टील)		31735		
साइड रैक (लकड़ी)		1530		
कूलर		23850		
स्टैबलाइजर		500		
वाटर (फिल्टर)		2284		
सेफ (कैश हेतु)		8130		
हाट केस		1475		
हीटकर्न्वटर		862		
टाइप मशीन		16453		
योग		124647	0	556401.36
वर्ष 1997—98				
प्रारम्भिक शेष	556401.36			
लैक्चर स्टैण्ड		2700		
कूलर		30837		
फैक्स मशीन		24378		
योग		57915	0	614316.36
वर्ष 1998—99				
प्रारम्भिक शेष	614316.36			
टेबल (स्टील)		8204		
रैक (स्टील)		2012		
टेबल टाप		6950		
अलमारी (स्टील)		25334		
कूलर		6546		
स्टेबलाइजर (फैक्स मशीन)		1734		
कम्प्यूटर		147750		
विद्युत टंकण गोदरेज—1		42840		
पानी ठण्डा करने वाली मशीन		22135		

२३

वर्ष	प्रारम्भिक शेष	क्रय की गई सम्पत्तियाँ	व्ययीकरण किया गया	अन्तिम शेष
योग		263505	0	877821.36
वर्ष 1999–2000				
प्रारम्भिक शेष	877821.36			
हाट केस		2932		
फिलिप्स टेलिविजन		30625		
कूलर स्टैण्ड		20619		
स्टेप्लाईजर (टंकण मशीन)		5700		
योग		59876	0	937697.36
वर्ष 2000–2001				
प्रारम्भिक शेष	937697.36			
अलमारी (स्टील)		43746		
बुक केस (स्टील)		30875		
कूलर		18290		
कार्पेट		49996		
वाटर प्यूरिफायर (एक्वाहवाइट)		4450		
योग		147357	0	1085054.36
वर्ष 2001–2002				
प्रारम्भिक शेष	1085054.36			
टेबल (स्टील)		4286		
बुक केस (स्टील)		34699		
टेप रिकोर्डर		4190		
हीटकर्न्वटर		1880		
वैक्यूम क्लीनर		4500		
योग		49555	0	1134609.36
वर्ष 2002–2003				
प्रारम्भिक शेष	1134609.36			
कुर्सी (घूमने वाली)		11249		
टेबल		4454		
हीट कर्न्वटर		2943		
कम्प्यूटर प्रिन्टर तथा यू.पी.एस. सहित		59760		
योग		78406	0	1213015.36
वर्ष 2003–2004				
प्रारम्भिक शेष	1213015.36			
रैक (स्टील)		5130		

22

वर्ष	प्रारम्भिक शेष	क्रय की गई सम्पत्तियाँ	व्ययीकरण किया गया	अन्तिम शेष
इन्वर्टर (कार्यालय हेतु)		17500		
इन्टरकॉम		36660		
कम्प्यूटर (2)		90323		
योग		149613	0	1362628.36
वर्ष 2004–2005				
प्रारम्भिक शेष	1362628.36			
कम्प्यूटर		8736		
योग		8736	0	1371364.36
वर्ष 2005–2006				
प्रारम्भिक शेष	1371364.36			
कम्प्यूटर/सॉफ्टवेयर क्रय		103454		
फर्नीचर		116846		
कार्यालय उपकरण (आर.ओ./वाटर फिल्टर)		12000		
इन्वर्टर		16490		
नोकिया फोन		9300		
योग		258090	0	1629454.36
वर्ष 2006–2007				
प्रारम्भिक शेष	1629454.36			
मोटर वाहन टाटा इन्डिका		330512.13		
योग		330512.13	0	1959966.49
वर्ष 2007–2008				
प्रारम्भिक शेष	1959966.49			
फोटो स्टेट मशीन		162320		
इन्वर्टर बैटरी		11400		
फर्नीचर		20489		
कम्प्यूटर		95495		
योग		289704	0	2249670.49
वर्ष 2008–2009				
प्रारम्भिक शेष	2249670.49			
फर्नीचर		88958		
सोफा सैट		6000		
कुर्सीया		7800		
अलमारी		15095		
योग		117853	0	2367523.49
वर्ष 2009–2010				
प्रारम्भिक शेष	2367523.49			
कूलर		67488		

(21)

वर्ष	प्रारम्भिक शेष	क्रय की गई सम्पत्तियाँ	व्ययीकरण किया गया	अन्तिम शेष
टेबल साईड रैक सहित		3656		
योग		71144	0	2438667.49
वर्ष 2010–2011				
प्रारम्भिक शेष	2438667.49			
योग		0	0	2438667.49
वर्ष 2011–2012				
प्रारम्भिक शेष	2438667.49			
गोदरेज फ्रिज		13031	11602.36	
फोटाकापी मशीन का स्टैण्ड			6500	
कुर्सी (1992–1993)			22272	
स्टूल लकड़ी (1993–1994)			948	
कुर्सी (डनलप –लकड़ी) 8800			8800	
स्टूल लकड़ी (1994–1995)			1264	
कुर्सी (घूमने वाली 1994–1995			776	
कुर्सी (डनलप) 1994–1995			31680	
स्टूल स्टील (1996–1997)			2760	
कुर्सी घूमने वाली 1996–1997			3504	
कूलर			23850	
वाटर फिल्टर			2284	
कूलर 1997–98			30837	
कूलर 1998–99			6546	
कूलर 2000–2001			18290	
नोकिया फोन 2005–2006			9300	
कूलर 2009–2010			1000	
			2208	
टेबल स्टील			480	
		13031	184901.36	2266797.13
वर्ष 2012–2013				
प्रारम्भिक शेष	2266797.13			
कुर्सी		3937		
विजिटर कुर्सी		12150		
टेबल टाप		1688		
अलमारी		3712		
कुर्सी		14500		
कुर्सी		10125		

(20)

वर्ष	प्रारम्भिक शेष	क्रय की गई सम्पत्तियाँ	व्ययीकरण किया गया	अन्तिम शेष
रूम कुलर		5063		
कूलर ट्राली		416		
कम्प्यूटर यू.पी.एस.		14850		
रूम हीटर		8685		
गीजर		4450		
डी.वी.डी. प्लेयर		2600		
कम्प्यूटर		199397		
मोबाइल		4000		
टेबल		10688		
मोबाईल		3800		
क्योसेरा (फोटोस्टेट मशीन)		170644		
कम्प्यूटर (यू.पी.एस.)		10973		
शो केस		4187		
प्रिंटर–5		26250		
टेलिविजन सोनी		39900		
टेबल		3262		
टेलिविजन (सोनी)		42900		
योग	0	598177	0	2864974.13
वर्ष 2013–14				
प्रारम्भिक शेष	2864974.13			
नोकिया मोबाईल		3900		
वीडियो कैमरा		29500		
टाइपोड स्टैण्ड		1900		
बैटरी		1900		
वायरस रिकोर्डर		5900		

(19

वर्ष	प्रारम्भिक शेष	क्रय की गई सम्पत्तियाँ	व्ययीकरण किया गया	अन्तिम शेष
स्पीकर		3800		
केबिल		500		
डिसप्ले बोर्ड–3		101250		
रीम्टर टेबल–2		11250		
स्टेप्लाइजर		2500		
ब्रिफकेस		3400		
नोटिस बोर्ड		1715		
वाटर कूलर		25088		
कम्प्यूटर		160932		
यू.पी.एस–2		3900		
आर. ओ. केण्ट		14000		
प्रिण्टर–1		7300		
प्रिण्टर–2		13200		
प्रिण्टर–1		6600		
प्रिण्टर–1		6600		
प्रिण्टर–1		6800		
सीढ़ी (जीना)		3360		
लैपटॉप–2		86364		
डिजिटल रिकोर्डर		4256		
रूम हीटर (ऑयल फिल्टर)		11995		
माइक		3060		
माइक स्टैण्ड		960		
योग		521930	0	3386904.13
वर्ष 2014–2015				
प्रारम्भिक शेष	3386904.13			
योग		0	0	3386904.13
वर्ष 2015–16				
प्रारम्भिक शेष	3386904.13			
एल.ई.डी. मोनिटर		5400		
प्रिन्टर		7500		
सी.सी.टी.वी. कैमरा		95920		
योग		108820	0	3495724.13

वर्ष	प्रारम्भिक शेष	क्रय की गई सम्पत्तियाँ	व्ययीकरण किया गया	अन्तिम शेष
वर्ष 2016–17				
प्रारम्भिक शेष	3495724.13			
मॉनिटर		11600		
दूरभाष उपकरण		6850		
स्केनर		45710		
प्रिन्टर		54573		
सी.सी.टी.वी. कैमरा		14978		
डेस्कटॉप (कम्प्यूटर)		184593		
योग		318304	0	3814028.13
वर्ष 2017–2018				
प्रारम्भिक शेष	3814028.13			
कूलर		65325		
योग		65325		3879353.13
वर्ष 2018–2019				
प्रारम्भिक शेष	3879353.13			
कम्प्यूटर		249980		
प्रोजेक्टर		46500		
प्रोजेक्टर स्क्रीन		16700		
यू.पी.एस		2790		
फ्रिज		23870		
योग		339840	0	4219193.13
वर्ष 2019–2020				
प्रारम्भिक शेष	4219193.13			
फोटोकॉपी मशीन		179960		
यू.पी.एस–5		10575		
प्रिंटर एच.पी–2		24800		
योग		215335	0	4434528.13

वर्ष	प्रारम्भिक शेष	क्रय की गई सम्पत्तियाँ	व्ययीकरण किया गया	अन्तिम शेष
वर्ष 2020–2021				
प्रारम्भिक शेष	4434528.13			
कूलर		13570.00		
बायोमेट्रिक अटेंडेन्स मशीन		21240.00		
वाल स्पीकर–3		6956.00		
मिक्सर एम्प्लीफायर–1		12602.00		
माइक्रोफोन–1		1055.00		
माइक्रोफोन स्टैंड–1		1192.00		
ड्रिंकिंग वाटर कूलर आर.ओ सहित		46300.00		
डेजर्ट कूलर		6490.00		
योग		109405.00	0.00	4543933.13
वर्ष 2021–2022				
प्रारम्भिक शेष	4543933.13			
वेब कैमरा (9) एवं स्पीकर (9)		35396.00		
इन्वर्टर की बैटरी		24700.00		
योग		60096.00	0.00	4604029.13

As per our Audit Report of even date attached
For R. RAI & CO.
Chartered Accountants
Firm Reg. No. 034059N

CA. Ravi Kr. Rai
Proprietor
M.No. 551968
Place : New Delhi
Date : 04/07/2022

(SAURABH KUMAR MISHRA)
DY. SECRETARY (Admin)

(DR. ARUN KUMAR JHA)
SECRETARY

(DAMODAR SINGH)
OS/CASHIER

(ROHIT KUMAR SETHI)
DY. SECRETARY (A/Cs)

(16)

दिल्ली संस्कृत अकादमी, दिल्ली सरकार, दिल्ली
प्लाट सं. 5, झण्डेवालान, करोल बाग, नई दिल्ली-05
पुस्तकालय

Year	Opening Balance	Purchased in this year	Closing balance
1988-89	0	572.5	572.5
1989-90	572.5	42278	42850.5
1990-91	42850.5	3212.1	46062.6
1991-92	46062.6	1778	47840.6
1992-93	47840.6	112	47952.6
1993-94	47952.6	1765	49717.6
1994-95	49717.6	5451.9	55169.5
1995-96	55169.5	2692.5	57862
1996-97	57862	10905	68767
1997-98	68767	7826	76593
1998-99	76593	13289	89882
1999-2000	89882	8057	97939
2000-01	97939	16279	114218
2001-02	114218	12578	126796
2002-03	126796	12577	139373
2003-04	139373	11034	150407
2004-05	150407	13437	163844
2005-06	163844	11105	174949
2006-07	174949	97769	272718
2007-08	272718	17674	290392
2008-09	290392	1873	292265
2009-10	292265	5780	298045
2010-11	298045	6850	304895
2011-12	304895	8564	313459
2012-13	313459	23986	337445
2013-14	337445	14818	352263
2014-15	352263	27054	379317
2015-16	379317	5326	384643
2016-17	384643	6250	390893
2017-18	390893	0	390893
2018-19	390893	0	390893
2019-20	390893	0	390893
2020-21	390893.00	0	390893.00
2021-22	390893.00	0	390893.00

As per our Audit Report of even date attached
For R. RAI & CO.
Chartered Accountants
Firm Reg. No. 034059N

CA. Ravi Kr. Rai
Proprietor
M.No. 551968
Place : New Delhi
Date : 04/07/2022

(SAURABH KUMAR MISHRA)
DY. SECRETARY (Admin)

(DR. ARUN KUMAR JHA)
SECRETARY

(DAMODAR SINGH)
OS/CASHIER

(ROHIT KUMAR SETHI)
DY. SECRETARY (A/Cs)

(15)

R. RAI & CO.
CHARTERED ACCOUNTANTS

DELHI SANSKRIT ACADEMY
GOVT. OF NCT OF DELHI
PLOT NO.5, JHANDEWALAN, KAROL BAGH, NEW DELHI-110005

FORM G.F.R.-19-A

UTILISATION CERTIFICATE UNDER ESTABLISHMENT EXPENSES (MH2205) SALARY - HEAD FOR THE YEAR 2021-2022

S.No	LETTER NO. & DATE	AMOUNT
1.	UNSPENT BALANCE AS ON 01.04.2021	65,38,594.25
2.	No.F.11/08/2021/ACL/275-281 DATED 05.07.2021	62,50,000
3.	No.F.11/08/2021/ACL/1023-1029 DATED 11.11.2021	59,62,000
4.	No.F.11/08/2021/ACL/1625-1631 DATED 03.03.2022	77,25,000
	TOTAL	2,64,75,594.25

Certified that out of total grant of Rs.2,64,75,594.25/-(i.e. opening unspent balance of Rs.6538594.25/-and Rs.1,99,37,000/-sanctioned during the year 2021-2022) under Establishment Expenses MH 2205 (Salary Head) in favour of Delhi Sanskrit Academy under the Language Department, Govt. of NCT of Delhi as per detail given in the margin and income from the other sources amounting to Rs.0/-. A sum of Rs.2,01,48,268/-under Establishment Expenses (MH 2205) Salary Head has been utilized during the year 2021-2022 for the purposed which it was sanctioned and balance of Rs.63,27,326.25/- from Salary Head recoverable from the DELHI SANSKRIT ACADEMY Delhi and being carried over in the next Financial Year 2022-2023.

Certified that I have certified myself that the condition on which the grant-in-aid sanctioned has been fulfilled and I have exercised the following checks to see that the money actually utilized for the purpose for which it was sanctioned.

<u>kind of checks exercised</u>

1) Checking of Vouchers
2) Books of Accounts for the period from 01-04-2021 to 31-03-2022.
3) Checking of Cash book/Bank book/Ledger.

As per our Audit Report of even date attached
For R. RAI & CO.
Chartered Accountants
Firm Reg. No. 034059N

Counter Signed

CA Ravi Kr. Rai
Proprietor
M.No. 551968
Place : New Delhi
Date : 04/07/2022

(SAURABH KR MISHRA)
DY. SECRETARY (ADMIN)

(DR. ARUN KUMAR JHA)
SECRETARY

(DAMODAR SINGH)
OS/CASHIER

(ROHIT KUMAR SETHI)
DY. SECRETARY (A/Cs)

UDIN:- 22551968AMEGSQ8404

R/o - R2/116, Mohan Garden, Uttam Nagar, New Delhi-110059
B/o - Shop No. - 8, Sector - 4, Mkt. R.K. Puram, New Delhi-110022
E-mail : rai.co039@gmail.com • Mob. : 9560634013, 8368333184

दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार, दिल्ली

वर्ष 2021–2022 का सामान्य वेतन मद का तलपट

मद	डेबिट	क्रडिट
अनुदान		19937000
पूंजी संचय		6538594.25
वेतन एवं भत्ते	19965230	
चिकित्सा व्यय	100271	
बैंक चार्ज	0	
एल टी सी	82767	
अंतिम शेष बैंक	6327326.25	
योग	**26475594.25**	**26475594.25**

As per our Audit Report of even date attached

For R. RAI & CO.

Chartered Accountants

Firm Reg. No. 034059N

CA. Ravi Kr. Rai
Proprietor
M.No. 551968
Place : New Delhi
Date : 04/07/2022

(SAURABH KUMAR MISHRA)
DY. SECRETARY (Admin)

(DR. ARUN KUMAR JHA)
SECRETARY

(DAMODAR SINGH)
OS/CASHIER

(ROHIT KUMAR SETHI)
DY. SECRETARY (A/Cs)

13

दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार, दिल्ली

सामान्य वेतन मद के अन्तर्गत वर्ष 2021–2022 का प्राप्ति एवं भुगतान खाता

प्राप्ति	राशि 2021–22	राशि 2020–21	भुगतान	राशि 2021–22	राशि 2020–21
प्रारम्भिक शेष	6538594.25	5036232.37	वेतन एवं भत्ते	19965230	18238791.52
अनुदान	19937000	19964000	चिकित्सा व्यय	100271	16360
			एल.टी.सी	82767	206463
			बैंक व्यय	0	23.6
			योग	20148268	18461638.12
			अंतिम शेष	6327326.25	6538594.25
योग	26475594.25	25000232.37	योग	26475594.25	25000232.37

As per our Audit Report of even date attached

For R. RAI & CO.

Chartered Accountants

Firm Reg. No. 034059N

CA. Ravi Kr. Rai
Proprietor
M.No. 551968
Place : New Delhi
Date : 04/07/2012

(SAURABH KUMAR MISHRA)
DY. SECRETARY (Admin)

(DR. ARUN KUMAR JHA)
SECRETARY

(DAMODAR SINGH)
OS/CASHIER

(ROHIT KUMAR SETHI)
DY. SECRETARY (A/Cs)

(12)

दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार, दिल्ली
सामान्य वेतन मद के अन्तर्गत वर्ष 2021-2022 का आय एवं व्यय खाता

व्यय	राशि 2021-22	राशि 2020-21	आय	राशि 2021-22	राशि 2020-21
वेतन एवं भत्ते	19965230	18238791.52	अनुदान	19937000	19964000
चिकित्सा व्यय	100271	16360			
एल.टी.सी	82767	206463			
बैंक व्यय	0	23.6			
योग	20148268	18461638.12	योग	19937000	19964000
व्यय से आय की अधिकता		1502361.88	आय से व्यय की अधिकता	211268	0
योग	20148268	19964000	योग	20148268	19964000

As per our Audit Report of even date attached
For R. RAI & CO.
Chartered Accountants
Firm Reg. No. 034059N

CA. Ravi Kr. Rai
Proprietor
M.No. 551968
Place : New Delhi
Date : 04/07/2022

(SAURABH KUMAR MISHRA)
DY. SECRETARY (Admin)

(DR. ARUN KUMAR JHA)
SECRETARY

(DAMODAR SINGH)
OS/CASHIER

(ROHIT KUMAR SETHI)
DY. SECRETARY (A/Cs)

(11)

दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार, दिल्ली
सामान्य वेतन मद के अन्तर्गत वर्ष 2021–2022 का आर्थिक चिट्ठा

	राशि	राशि		राशि	राशि
दायित्व	2021–22	2020–21	सम्पत्तियाँ	2021–22	2020–21
पूंजी संचय	6538594.25	5036232.37	बैंक	6327326.25	6538594.25
जमा व्यय से आय की अधिकता		1502361.88			
घटाया आय से व्यय की अधिकता	211268				
योग	6327326.25	6538594.25	योग	6327326.25	6538594.25

As per our Audit Report of even date attached
For R. RAI & CO.
Chartered Accountants
Firm Reg. No. 034059N

CA Ravi Kr. Rai
Proprietor
M.No.-551968
Place : New Delhi
Date : 04/07/2022

(SAURABH KUMAR MISHRA)
DY. SECRETARY (Admin)

(DR. ARUN KUMAR JHA)
SECRETARY

(DAMODAR SINGH)
OS/CASHIER

(ROHIT KUMAR SETHI)
DY. SECRETARY (A/Cs)

(10)

R. RAI & CO.
CHARTERED ACCOUNTANTS

DELHI SANSKRIT ACADEMY
GOVT. OF NCT OF DELHI
PLOT NO.5, JHANDEWALAN, KAROL BAGH, NEW DELHI-110005

FORM G.F.R.-19-A

UTILISATION CERTIFICATE UNDER HEAD TEACHING PROGRAMME (MH2202) GENERAL HEAD FOR THE YEAR 2021-2022

S.No	LETTER NO. & DATE	AMOUNT
1.	UNSPENT BALANCE AS ON 01.04.2021	11,97,759.63
2.	No.F.11/08/2021/ACL/275-281 DATED 05.07.2021	3,75,000
	TOTAL	1572759.63

Certified that out of total grant of Rs.15,72,759.63/-(i.e. opening unspent balance of Rs. 11,97,759.63/- and Rs.3,75,000/- sanctioned during the year 2021-2022) under Teaching Programme MH 2202 (General Head) in favour of **Delhi Sanskrit Academy** under the Language Department, Govt. of NCT of Delhi as per detail given in the margin and income from the other sources amounting to Rs.1,015/-. A sum of Rs.0/- under Teaching Programme (MH 2202) General Head has been utilized during the year 2021-2022 for the purpose which it was sanctioned and balance of Rs.15,73,774.63/- from Teaching Head recoverable from the DELHI SANSKRIT ACADEMY Delhi and being carried over in the next Financial Year 2022-2023.

Certified that I have certified myself that the condition on which the grant-in-aid sanctioned has been fulfilled and I have exercised the following checks to see that the money actually utilized for the purpose for which it was sanctioned.

<u>kind of checks exercised</u>

1) Checking of Vouchers
2) Books of Accounts for the period from 01-04-2021 to 31-03-2022.
3) Checking of Cash book/Bank book/Ledger.

As per our Audit Report of even date attached
ForR. RAI& CO.
Chartered Accountants
Firm Reg. No. 034059N

Counter Signed

CA. Ravi Kr. Rai
Proprietor
M.No. 551968
Place : New Delhi
Date : 04/07/2022

(SAURABHKR MISHRA)
DY. SECRETARY (ADMIN)

(DR. ARUN KUMAR JHA)
SECRETARY

(DAMODAR SINGH)
OS/CASHIER

(ROHIT KUMAR SETHI)
DY. SECRETARY (A/Cs)

UDIN - 22551968AMEHCL8451

R/o - R2/116, Mohan Garden, Uttam Nagar, New Delhi-110059
B/o - Shop No. - 8, Sector - 4, Mkt. R.K. Puram, New Delhi-110022
E-mail : rai.co039@gmail.com • Mob. : 9560634013, 8368333184

(9)

दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार, दिल्ली

वर्ष 2021–2022 का शिक्षण सामान्य मद का तलपट

मद	डेबिट	क्रडिट
अनुदान		375000
डाक टिकिट शेष	10305	
पूंजी संचय		1208064.63
अकादमी प्रकाशन से प्राप्त आय (संस्कृत चंद्रिका)		1015
नगद	0	
बैंक	1573774.63	
योग	1584079.63	1584079.63

As per our Audit Report of even date attached
For R. RAI & CO.
Chartered Accountants
Firm Reg. No. 034059N

R. RAI & CO. CHARTERED ACCOUNTANTS F.No. 034059N

CA. Ravi Kr. Rai
Proprietor
M.No-551968
Place : New Delhi
Date : 04/07/2022

(SAURABH KUMAR MISHRA)
DY. SECRETARY (Admin)

(DR. ARUN KUMAR JHA)
SECRETARY

(DAMODAR SINGH)
OS/CASHIER

(ROHIT KUMAR SETHI)
DY. SECRETARY (A/Cs)

दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार, दिल्ली
शिक्षण मद सामान्य के अन्तर्गत वर्ष 2021–2022 का प्राप्ति एवं भुगतान खाता

	राशि	राशि		राशि	राशि
प्राप्ति	2021–22	2020–21	भुगतान	2021–22	2020–21
प्रारम्भिक शेष			संस्कृत चन्द्रिका	0	520
नगद – 0			डाक व्यय	0	15000
बैंक – 1197759.63	1197759.63	1208279.63			
अनुदान	375000	0	योग	0	15520
अकादमी प्रकाशन से आय	1015	5000			
			अंतिम शेष		
			नगद – 0		
			बैंक – 1573774.63	1573774.63	1197759.63
योग	1573774.63	1213279.63	योग	1573774.63	1213279.63

As per our Audit Report of even date attached
For R. RAI & CO.
Chartered Accountants
Firm Reg. No. 034059N

CA Ravi Kr. Rai
Proprietor
M.No. 551968
Place : New Delhi
Date : 04/07/2022

(SAURABH KUMAR MISHRA)
DY. SECRETARY (Admin)

(DR. ARUN KUMAR JHA)
SECRETARY

(DAMODAR SINGH)
OS/CASHIER

(ROHIT KUMAR SETHI)
DY. SECRETARY (A/Cs)

दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार, दिल्ली

शिक्षण मद सामान्य के अन्तर्गत वर्ष 2021–2022 का आय एवं व्यय खाता

		राशि	राशि		राशि	राशि
व्यय		2021–22	2020–21	आय	2021–22	2020–21
संस्कृत चन्द्रिका		0	520	अनुदान	375000	0
प्रारम्भिक	10305			अकादमी प्रकाशन से आय	1015	5000
जमा खर्च	0					
शेष	9815	490	12033			
योग		490	12553	योग	376015	5000
व्यय से आय की अधिकता		375525	0	आय से व्यय की अधिकता		7553
योग		376015	12553	योग	376015	12553

As per our Audit Report of even date attached

For R. RAI & CO.

Chartered Accountants

Firm Reg. No. 034059N

CA. Ravi Kr. Rai

Proprietor

M.No. 551968

Place : New Delhi

Date : 04/08/2022

(SAURABH KUMAR MISHRA)
DY. SECRETARY (Admin)

(DR. ARUN KUMAR JHA)
SECRETARY

(DAMODAR SINGH)
OS/CASHIER

(ROHIT KUMAR SETHI)
DY. SECRETARY (A/Cs)

6

दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार, दिल्ली
शिक्षण मद सामान्य के अन्तर्गत वर्ष 2021–2022 का आर्थिक चिट्ठा

दायित्व	राशि 2021–22	राशि 2020–21	सम्पत्तियाँ	राशि 2021–22	राशि 2020–21
पूंजी संचय	1208064.63	1215617.63	डाक टिकट शेष	9815	10305
जमा व्यय से आय की अधिकता	375525		नगद – 0		
घटाया आय से व्यय की अधिकता	0	7553	बैंक – 1573774.63	1573774.63	1197759.63
योग	1583589.63	1208064.63	योग	1583589.63	1208064.63

As per our Audit Report of even date attached
For R. RAI & CO.
Chartered Accountants
Firm Reg. No. 034059N

CA Ravi Kr. Rai
Proprietor
M.No. 551968
Place : New Delhi
Date : 04/07/2022

(SAURABH KUMAR MISHRA)
DY. SECRETARY (Admin)

(DR. ARUN KUMAR JHA)
SECRETARY

(DAMODAR SINGH)
OS/CASHIER

(ROHIT KUMAR SETHI)
DY. SECRETARY (A/Cs)

(5)

R. RAI & CO.

CHARTERED ACCOUNTANTS

DELHI SANSKRIT ACADEMY
GOVT. OF NCT OF DELHI
PLOT NO.5, JHANDEWALAN, KAROL BAGH, NEW DELHI-110005

FORM G.F.R.-19-A

UTILISATION CERTIFICATE UNDER TEACHING PROGRAMME (MH2202) SALARY HEAD FOR THE YEAR 2021-2022

S.No	LETTER NO. & DATE	AMOUNT
1.	UNSPENT BALANCE AS ON 01.04.2021	48,15,848
2.	No.F.11/08/2021/ACL/275-281 DATED 05.07.2021	77,50,000
3.	No.F.11/08/2021/ACL/1023-1029 DATED 11.11.2021	1,06,84,000
4.	No.F.11/08/2021/ACL/1816-1823 DATED 30.03.2022	103,00,000
	TOTAL	3,35,49,848

Certified that out of total grant of Rs.3,35,49,848/-(i.e. opening unspent balance of Rs.48,15,848/-and Rs.2,87,34,000 / sanctioned during the year 2021-2022) under Teaching Programme MH 2202 (Salary Head) in favour of **Delhi Sanskrit Academy** under the Language Department, Govt. of NCT of Delhi as per detail given in the margin and income from the other sources amounting to Rs.0/-. A sum of Rs.2,40,56,111/- under Teaching Programme(MH 2202) Salary Head has been utilized during the year 2021-2022 for the purpose which it was sanctioned and balance of Rs.94,93,737/-from Teaching Head recoverable from the DELHI SANSKRIT ACADEMY Delhi and being carried over in the next Financial Year 2022-2023.

Certified that I have certified myself that the condition on which the grant-in-aid sanctioned has been fulfilled and I have exercised the following checks to see that the money actually utilized for the purpose for which it was sanctioned.

Kind of checks exercised

1) Checking of Vouchers
2) Books of Accounts for the period from 01-04-2021 to 31-03-2022.
3) Checking of Cash book/Bank Book/Ledger.

As per our Audit Report of even date attached

For R. RAI & CO.
Chartered Accountants
Firm Reg. No. 034059N

Counter Signed

CA. Ravi Kr. Rai
Proprietor
M.No. 551968
Place : New Delhi
Date : 04/07/2022

(SAURABH KR MISHRA)
DY. SECRETARY (ADMIN)

(DR. ARUN KUMAR JHA)
SECRETARY

(DAMODAR SINGH)
OS/CASHIER

(ROHIT KUMAR SETHI)
DY. SECRETARY (A/Cs)

UD IN:- 22551968AMEHJE5860

R/o - R2/116, Mohan Garden, Uttam Nagar, New Delhi-110059
B/o - Shop No. - 8, Sector - 4, Mkt. R.K. Puram, New Delhi-110022
E-mail : rai.co039@gmail.com • Mob. : 9560634013, 8368333184

(4)

दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार, दिल्ली
वर्ष 2021–2022 का शिक्षण वेतन मद का तलपट

मद	डेबिट	क्रेडिट
पूंजी संचय		4815848
अनुदान		28734000
वेतन एवं भत्ते	24056111	
अंतिम शेष बैंक	9493737	
योग	33549848	33549848

As per our Audit Report of even date attached
For R. RAI & CO.
Chartered Accountants
Firm Reg. No. 034059N

R. RAI & CO. CHARTERED ACCOUNTANTS F.No. 034059N New Delhi

CA. Ravi Kr. Rai
Proprietor
M.No. 551968
Place : New Delhi
Date : 04/03/2022

(SAURABH KUMAR MISHRA)
DY. SECRETARY (Admin)

(DR. ARUN KUMAR JHA)
SECRETARY

(DAMODAR SINGH)
OS/CASHIER

(ROHIT KUMAR SETHI)
DY. SECRETARY (A/Cs)

③

दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार, दिल्ली
शिक्षण वेतन मद के अन्तर्गत वर्ष 2021–2022 का प्राप्ति एवं भुगतान खाता

प्राप्ति	राशि 2021–22	राशि 2020–21	भुगतान	राशि 2021–22	राशि 2020–21
प्रारम्भिक शेष	4815848	5212037	वेतन एवं भत्ते	24056111	26184189
अनुदान	28734000	25788000			
			योग	24056111	26184189
			अंतिम शेष	9493737	4815848
योग	33549848	31000037	योग	33549848	31000037

As per our Audit Report of even date attached
For R. RAI & CO.
Chartered Accountants
Firm Reg. No. 034059N

CA. Ravi Kr. Rai
Proprietor
M.No. 551968
Place : New Delhi
Date : 04/07/2022

(SAURABH KUMAR MISHRA)
DY. SECRETARY (Admin)

(DR. ARUN KUMAR JHA)
SECRETARY

(DAMODAR SINGH)
OS/CASHIER

(ROHIT KUMAR SETHI)
DY. SECRETARY (A/Cs)

(2)

दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार, दिल्ली
शिक्षण वेतन मद के अन्तर्गत वर्ष 2021–2022 का आय एवं व्यय खाता

व्यय	राशि 2021–22	राशि 2020–21	आय	राशि 2021–22	राशि 2020–21
वेतन एवं भत्ते	24056111	26184189	अनुदान	28734000	25788000
योग	24056111	26184189	योग	28734000	25788000
व्यय से आय का अधिकता	4677889		आय से व्यय का अधिकता		396189
योग	28734000	26184189	योग	28734000	26184189

As per our Audit Report of even date attached
For R. RAI & CO.
Chartered Accountants
Firm Reg. No. 034059N

CA. Ravi Kr. Rai
Proprietor
M.No. 551968
Place : New Delhi
Date : 04/07/2022

(SAURABH KUMAR MISHRA)
DY. SECRETARY (Admin)

(DR. ARUN KUMAR JHA)
SECRETARY

(DAMODAR SINGH)
OS/CASHIER

(ROHIT KUMAR SETHI)
DY. SECRETARY (A/Cs)

(1)

दिल्ली संस्कृत अकादमी दिल्ली सरकार, दिल्ली
शिक्षण वेतन मद के अन्तर्गत वर्ष 2021–2022 का आर्थिक चिट्ठा

दायित्व	राशि 2021–22	राशि 2020–21	सम्पत्तियाँ	राशि 2021–22	राशि 2020–21
पूंजी संचय	4815848	5212037	बैंक	9493737	4815848
जमा व्यय से आय की अधिकता	4677889				
घटाया आय से व्यय की अधिकता		396189			
योग	9493737	4815848	योग	9493737	4815848

As per our Audit Report of even date attached
For R. RAI & CO.
Chartered Accountants
Firm Reg. No. 034059N

CA. Ravi Kr. Rai
Proprietor
M.No. 551968
Place : New Delhi
Date : 04/07/2022

(SAURABH KUMAR MISHRA)
DY. SECRETARY (Admin)

(DR. ARUN KUMAR JHA)
SECRETARY

(DAMODAR SINGH)
OS/CASHIER

(ROHIT KUMAR SETHI)
DY. SECRETARY (A/Cs)

वार्षिकी

(२०२१-२०२२)

ANNUAL REPORT

(2021- 2022)

सम्पादक
डॉ0 अरुण कुमार झा
सचिव

दिल्ली-संस्कृत-अकादमी
(दिल्ली सरकार)